मासिक

गुरमत ज्ञान

ISSN 2394-8485

३/-

पौष-माघ संवत् नानकशाही ५५५ जनवरी 2024 वर्ष १७ अंक ५

सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब

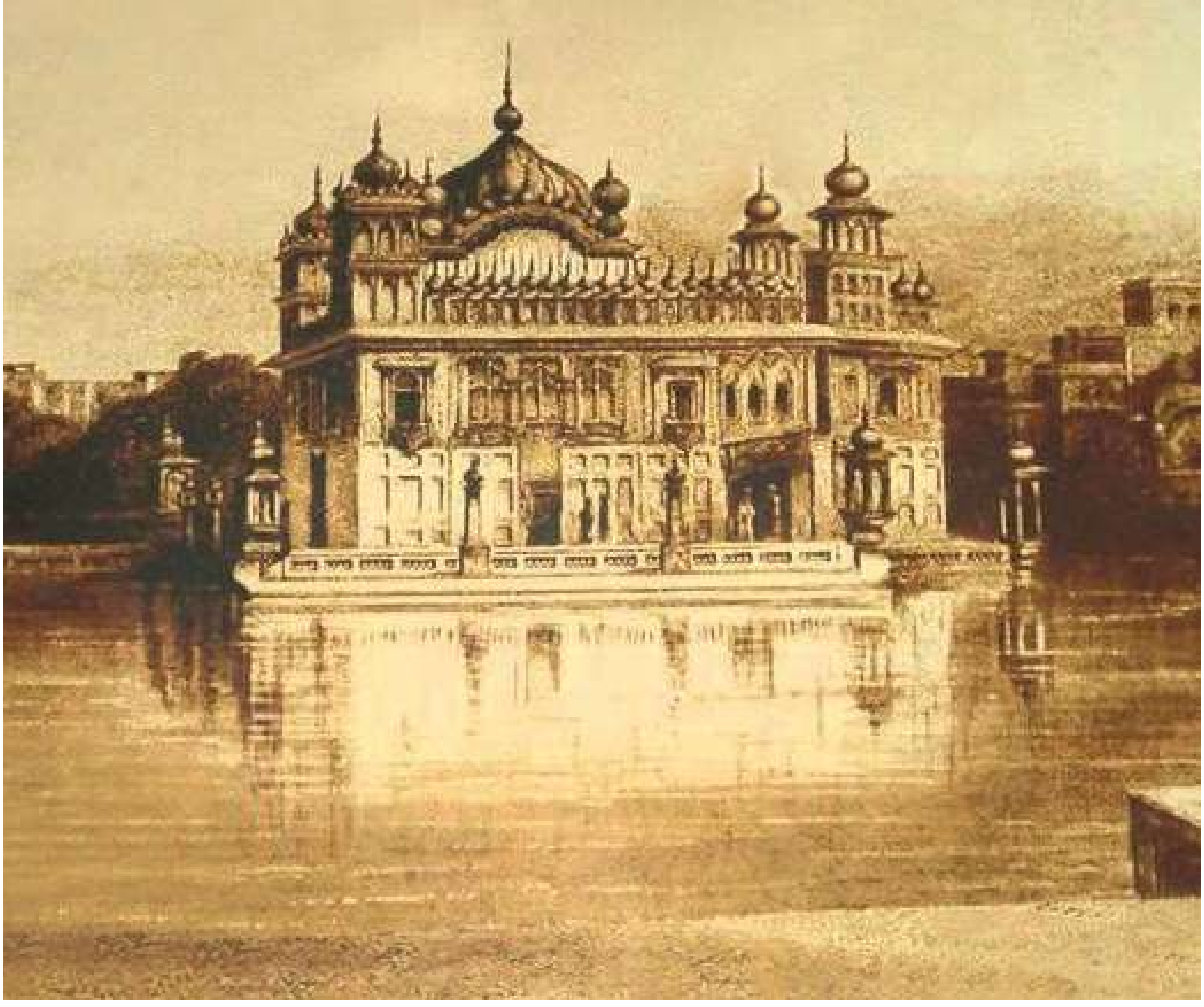

प्रकाश-स्थान श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी,
तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब (बिहार)

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

पौष-माघ संवत् नानकशाही 555

वर्ष 17 अंक 5 जनवरी 2024

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10	रुपये
आजीवन (देश)	100	रुपये
सालाना (विदेश)	250	रुपये
प्रति कापी	3	रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
. . . दशम गुरु का गुणगान 7
-स. सुरजीत सिंघ
यात्रा श्री पटना साहिब की 9
-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
भाई नंद लाल जी की दृष्टि में गुरु-संस्था 14
-डॉ. पलविंदर कौर
शहीद बाबा दीप सिंघ जी 19
- डॉ. हरबंस सिंघ
सचखंड श्री हरिमंदर साहिब 28
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
जापु साहिब की बाणी : एक विस्मयकारी आत्मिक यात्रा 31
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि॥ 36
-डॉ. मनजीत कौर
'सिंह' नहीं 'सिंघ' लिखें! 41
-प्रो. सुरिंदर कौर
कृपाण 'गुरु गोबिंद सिंघ' की (कविता) 47
-स. करनैल सिंघ सरदार पंछी
खबरनामा 48

गुरबाणी विचार

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥
जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥
कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥
सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥
अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥
जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥
जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥
माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥१२॥ (पन्ना १३५)

पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ बाणी की इस पावन पउड़ी में पुरातन काल से चली आ रही माघ महीने में तीर्थ-स्नान की परंपरा की पृष्ठभूमि में मनुष्य-मात्र को परमात्मा के सच्चे नाम-सिमरन का सहारा लेते हुए वास्तविक आत्मिक विकास के लिए गुरमति महामार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि हे मनुष्य! तेरे लिए वास्तविक लाभ लेने का रास्ता यही है कि माघ के महीने में तू नेक जनों- गुरमुखों की संगत कर! उनसे मिलकर प्रभु-नाम के महत्त्व पर विचार कर! तू गुरमुखों के साथ परमात्मा के नाम की स्तुति रूपी धूलि का स्पर्श कर! यही तेरा स्नान है! तू माघ माह में परमात्मा का नाम स्मरण कर और यह अपने तक ही सीमित न रख! परमात्मा द्वारा मिली इस अनमोल दात (बख्शिश) को आगे भी वितरित कर! यहां समझने योग्य विचार-बिंदु यह है कि गुरमति में अकेले में प्रभु-नाम-चिंतन करने की बजाय संगत में जाकर चिंतन-मनन करने का अधिक महत्त्व माना जाता है।

सतिगुरु पातशाह कथन करते हैं कि हे मानव! यह ऐसा कारगर ढंग है कि इससे मन पर चढ़ी हुई कई जन्मों में किए दुष्कर्मों की मैल उतर जाएगी और तेरे मन से अहंकार चला जाएगा। काम और क्रोध के नुकसानदेय विकारी भाव तुझ पर हावी नहीं रहेंगे। न ही मोह तंग करेगा और लालच रूपी कुत्ता भी तुझे दर-दर नहीं भटकाएगा। सच्चे मार्ग पर चलने से तेरा अपना आत्मिक लाभ तो है ही, संसार भी तेरी शोभा का गुणगान करेगा। अठसठ तीर्थों के स्नान से प्राप्त किए जाने वाले जो पुण्य गणना में आते हैं वे जीवों पर दया-भाव प्रकट करने से स्वत: मिल जाते हैं अर्थात् माघ महीने में हे मनुष्य! तुझे हिंसक व्यवहार को छोड़ना होगा।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जिस मनुष्य को नेक-जनों की संगत प्रभु स्वयं प्रदान कर देता है वह मनुष्य वास्तव में बुद्धिमान है। जिनको अपना मूल स्रोत-- परमात्मा मिल गया, मैं उन पर कुर्बान जाता हूं। माघ महीने में जिन पर पूरा गुरु कृपालु होता है वे भाग्यशाली लोग मात्र बाहरी स्नान से नहीं, बल्कि रूहानी स्नान करने से स्वच्छ होते हैं।

संपादकीय

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का रूहानी मिशन

गुरु साहिब का रूहानी मिशन देश-कौम की हदबंदियों से ऊपर समूची मानवता को अपने परिरंभण में लेकर सर्वसाझा भाईचारा सृजित करना था। इस सर्वसाझे भाईचारे के लिए धर्मी राज्य तथा धर्मी समाज की ज़रूरत थी, जिसमें सामाजिक, आर्थिक असमानता को खत्म कर अमीर-गरीब, ऊंच-नीच के पक्षपात को मिटाकर सबमें ''ना को बैरी नही बिगाना'' तथा ''एकु पिता एकस के हम बारिक'' का रूहानी एहसास जगाया जा सके।

श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी तक इस मिशन की पूर्ति के लिए गुरु साहिबान को लंबा संघर्ष करना पड़ा, जिसमें दो गुरु साहिबान को अपनी शहादत भी देनी पड़ी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा आरंभ किए इस रूहानी मिशन 'नानक निर्मल पंथ' की 'गुरु खालसा पंथ' के रूप में सम्पूर्णता करनी थी, इसलिए अकाल पुरख ने विशेष बख़्शिशों से निवाज कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को इस जगत में भेजा।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इस जगत में आने के मंतव्य के बारे में बताते हुए 'बचित्र नाटक' में फरमान करते हैं :

हम इह काज जगत मो आए ।। धरम हेत गुरदेव पठाए ।।
जहां तहां तुम धरम बिथारो ।। दुसट दोखीअनि पकरि पछारो ।।४२।।६।।

गुरु साहिबान के इस आत्म-कथन से स्पष्ट हो जाता है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इस जगत में अधर्म का नाश कर धर्म का राज्य स्थापित करने के लिए आए थे। गुरु जी के इस मिशन की पूर्ति के आगे जो भी दुष्ट-दोखी बाधा बना, चाहे वह मुगल हुकूमत थी, चाहे पहाड़ी हिंदू राजा थे, गुरु जी ने शस्त्रबद्ध संघर्ष करते हुए उन दुष्ट-दोखियों को पछाड़ा और सदैवकालीन धर्मी राज्य तथा धर्मी समाज को स्थापित करने हेतु आदर्श मनुष्य की सम्पूर्णता के तहत खालसा पंथ की सृजना की।

यदि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समूचे जीवन पर संक्षिप्त नज़र डालें तो बचपन में गुरु-पिता जी को धार्मिक स्वतंत्रता के लिए शहीद होते देखना, जुल्म तथा अन्याय के विरुद्ध जंग लड़ना, बुज़दिल हो चुकी भारतीय मानसिकता के अंदर वीर रस पैदा करने के लिए वीर-रसी साहित्य की रचना करना, खालसा पंथ की सृजना करना तथा पंथ की खातिर अपना सरवंश कुर्बान कर देना व अंतिम समय तख़्त श्री हजूर साहिब में सिक्ख संगत को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के लड़ लगाना देहधारी गुरु-परंपरा को खत्म कर 'नानक निर्मल पंथ' की 'गुरु-ग्रंथ' व 'गुरु-पंथ' के रूप में सम्पूर्णता करते हुए बदी के विरुद्ध निरंतर संघर्ष के लिए पांच सिंघों सहित बाबा बंदा सिंघ बहादुर को पंजाब की तरफ भेजना, इतने महान कार्य एक जन्म, वो भी मात्र ४२ वर्ष की आयु में सम्पूर्ण कर लेना गुरु जी की अतुल्य शख़्सियत तथा अकाल पुरख की कृपा के कारण ही था।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का इस जगत में आगमन, उनके जीवन-संघर्ष तथा खालसा पंथ की सृजना को किसी विशेष श्रेणी (सनातन धर्म) की रक्षा हेतु किए गए कार्य सिद्ध करना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के रूहानी मिशन को सीमित करने के षड्यंत्र हैं, जिससे सुचेत रहने की ज़रूरत है। गुरु जी का इस जगत में आगमन ज़ालिमों का नाश कर मज़लूमों तथा मानवाधिकरों की रक्षा करना और लोगों को अपनी इज्जत व अपने अधिकारों के संरक्षक बनाना था।

दूसरा, गुरु जी को भारतीय परंपरा के संदर्भ में रखकर देखने के यत्न भी गुरु जी की अज़मत को कम करना है। गुरु जी का आशय अवतारवाद, आत्म-पूजा *''ते कहै करो हमारी पूजा ।। हम बिन अवरु न ठाकुरु दूजा।।''* के विपरीत *''आदि अंति एकै अवतारा ।। सोई गुरू समझियहु हमारा।।''*वाला था, जो गुरु जी के मिशन को भारतीय अवतारवाद के मिशन से अलग कर गुरु जी के मिशन की भिन्नता पेश करता है, जिसमें 'पूजा अकाल की, परचा शब्द का, दीदार खालसे का' वाला आदर्श शामिल है। सदियों से देश की गुलामी का कारण देशवासियों में एकता की कमी थी। इस एकता की कमी का मुख्य कारण अवतारवाद था, इष्ट-अनेकता था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मानवता को समझाया कि यह अवतारवाद, अनेक इष्ट-पूजा किसी प्रकार भी मानसिक तथा शारीरिक गुलामी के उद्धार की साधना नहीं बन सकती :

राम रहीम उबार न सकि है जा कर नाम रटै है ।।
ब्रहमा बिशन रुद्र सूरह ससि ते बसि काल सभै है ।।

गुरु जी ने अवतारवादी की पूजा छोड़कर सारी सृष्टि के रचयिता करतार को परमेश्वर मानने का उपदेश किया :

बिन करतार न किरतम मानो ।।
आदि अजोनि अजै अबिनासी तिह परमेसर जानो ।।

गुरु जी ने इष्ट-अनेकता को खत्म कर इष्ट-एकता के उपदेश से धार्मिक, आध्यात्मिक क्रांति पैदा की और एक पुरखी राज्य की धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक गुलामी को ख़त्म कर पंच-प्रधानी सिद्धांत को लागू किया।

आज मानवता को दरपेश समस्याओं तथा हर प्रकार की बुराइयों के समाधान श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की रूहानी विचारधारा में से तलाशे जा सकते हैं। गुरु जी की विचारधारा को विश्व भर में पहुंचाने हेतु हमें एक लहर बनकर आगे आना होगा।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश गुरुपर्व मनाते हुए हमें खुद भी आत्म-चिंतन करने की ज़रूरत है कि आज हम गुरु जी के उपदेशों को किस हद तक अपने व्यवहारिक जीवन में अपना सके हैं। आज हम जिन पदवियों तथा रुतबे का आनंद ले रहे हैं, यह सब कलगीधर पिता सरवंशदानी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कुर्बानियों के ही कारण है। गुरु जी के शुक्रगुज़ार बने रहने के लिए हमें अल्लाह यार खान योगी के शब्द याद रखने चाहिए :

दिलाई पंथ को सर-बाज़िओं से सरदारी,
बराइ-कौम यि रुतबे लहू बहा के लिए।

श्री माणक चंद रामपुरिया द्वारा रचित महाकाव्य में दशम गुरु का गुणगान

-स. सुरजीत सिंघ *

भक्ति, शक्ति और त्याग की त्रिवेणी में आप्लावित श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का विराट व्यक्तित्व उस आलौकिक प्रतिभा से संयुक्त है, जिसमें श्री गुरु अरजन देव जी से शान्ति, सहनशीलता, त्याग के साथ-साथ अपने पितामह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से, मीरी-पीरी (भक्ति-शक्ति) की शिक्षा-दीक्षा तथा पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब से शहादत का परम आदर्श जीवन घुट्टी के रूप में समाहित है।

पद्दलित हो रही मानवता में अभ्युत्थान एवं गौरव जगाने, आध्यात्मिक जीवन में बौद्धिक, धार्मिक, नैतिक मूल्य समाहित करने, देश की आजादी हेतु, पीड़ित, दबी-कुचली मानवता के आदर्शों एवं अधिकारों की सुरक्षा हेतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सन् १६९९ की वैशाखी को 'खालसा-पंथ' की स्थापना कर संत-सिपाही का आदर्श प्रस्तुत किया।

हिन्दी के प्रख्यात कवि-लेखक, राजस्थान के मूल निवासी श्री माणक चन्द रामपुरिया ने खालसा पंथ की त्रिशताब्दी के अवसर पर वर्ष १९९९ ई. में रचित महाकाव्य '. . . श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी' में सिक्ख धर्म के जीवन-आदर्शों एवं सिक्ख धर्म की गौरव-गाथाओं का विस्तृत वर्णन करते हुए महाकाव्य के पृष्ठ संख्या ९७-९८ पर लिखा है :

सच्चा धर्म यही है सब में,
निर्मल भाव जगाओ!
ऊंच-नीच का भेद मिटाकर, सबको गले लगाओ!
नर-नारी सब एक सदृश हैं, भेद न इनमें लाओ!
कन्या-हंता जन को त्यागो, उसको दूर भगाओ!
केश बढ़ाओ, कंघा रखो, ग्रहण कड़ा भी कर लो!
कछहिरा पहनो और कमर में तुम, कृपाण भी धर लो!
धूम्रपान, सब नशे हटाओ, कभी न इनको लेना!
इनको लेकर सबको अपना, स्वास्थ्य पड़ेगा खोना!
अपने को सब 'सिंघ' कहेंगे, प्रेम भरा अभिनंदन!
इस तरह से सभी करेंगे, आपस में अभिवादन।
'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतह।"

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जैसा दृढ़निश्चयी, अडिग, क्षमाकर्ता, शूरवीर, महादानी, त्यागी, तपस्वी, सिंघ-हृदय महापुरुष भारत तो क्या विश्व इतिहास में भी मिलना असंभव प्रतीत होता है। "*धरम चलावन संत उबारन।। दुसट सभन को भूल उपारन।।*"के अनुसार प्रताड़ित एवं जर्जरित भारतीय समाज का कायाकल्प कर स्वर्णिम अध्याय का दशम गुरु जी ने शुभारम्भ कर दिया था। भक्ति-शक्ति, मीरी-पीरी, शास्त्र-शस्त्र, कथनी-करनी, अमीरी-गरीबी, गुरु-शिष्य, स्वामी-सेवक का अनोखा समन्वय स्थापित कर कलम के साथ-साथ शक्तिवाहिनी कृपाण उठाकर गुरु जी ने स्वयं के स्वाभिमान की रक्षा करने के साथ-साथ दूसरों के स्वाभिमान की भी रक्षा करते हुए फख्र से सिर

**५७-बी, न्यू कालोनी, गुमानपुरा, कोटा, राजस्थान, फोन : ९४१३६-५१११७*

ऊंचा उठा कर जीने का अप्रतिम एवं अपूर्व मार्ग प्रशस्त किया, जिसे प्रख्यात हिन्दी कवि-लेखक श्री माणक चन्द रामपुरिया ने अपने महाकाव्य के पृष्ठ संख्या ११५ पर वर्णन किया है :

कहा खींच कृपाण हाथ में, शक्ति इसे ही मानो!
यही धर्म-रक्षक, अधर्म का नाश करेगी जानो!
अपने और पराये सबकी, एक हुई पहचान।
दुश्मन के सैनिक-गण का भी,
किया बड़ा कल्याण।

दशम पिता जैसे कवि-हृदय, लोकनायक, कर्मठ योद्धा में आत्म-शक्ति, निर्भीकता ही संचित निधि एवं प्रेरणादायिनी है, जो अपने इष्ट के प्रति भावनात्मक एवं हृदय को द्रवित कर देने वाली रचित बाणी में द्रष्टव्य है-- *''मित्र पिआरे नूं हाल मुरीदां दा कहिणा।।''*

महाकाव्य के पृष्ठ संख्या १३२-१३५ पर रचनाकार ने गुरु जी के व्यक्तित्व और आदर्शों को भावभीनी शब्दावली में व्यक्त करते हुये अंकित किया है:

सब धर्मों को एक समझ कर
सबको समुचित मान दिया।
मानव को 'सम्पूर्ण' बनाकर,
जीवन का उत्थान किया ।
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र-सा,
कार्य मनुज कर सकता है।
एक मनुज में सब कुछ करने की पूर्ण क्षमता है।
जन-सेवा करनी है सबको, लंगर सदा चलाना है।
जो कुछ है सब ईश्वर का है, इसे बांट कर खाना है।
मानवता हो कभी न पीड़ित,
तुमने उज्जवल ज्ञान दिया।
सेवा-भावना भरी आलौकिक,
तुमने साझा विहान दिया।
नये 'खालसा पंथ' पर सबको,
तुमने चलना सिखलाया।
'वाहिगुरु जी' कह अभिवादन का,
नूतन क्रम बतलाया।
मानव प्रेम को धर्म-भाव के,
साथ जोड़ कर खड़ा किया।
मानवता के गुण को तुमने, देवों से भी बड़ा किया।
हिन्दू-मुस्लिम की खाई को, गुरु ने पाटा प्रेम बढ़ा।
उच्चादर्शों को अपनाया, सात्विकता का नेम बढ़ा।
धन्य-धन्य गुरु जिनकी बाणी,
पथ-प्रदर्शक स्वयं बनी।
शुद्ध आचरण-बल से पावन,
कर्म-भावना अहं बनी।
युगों-युगों के बाद धरा पर, कोई ऐसा आता है।
ऐसे जग-उद्धारक को ही, जन-जन शीश निवाता है।
'गुरु गोबिंद' हो तुम्हीं स्मृति में,
हम भी अर्घ्य चढ़ाते हैं।
अमर गुरु गोबिंद सिंघ जी तुम्हारी,
जय-जय हम दोहराते हैं।

विशाल हृदयी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ही हैं जिन्होंने बड़े-बड़े पापिओं, अत्याचारियों एवं अपराधियों को पराजित करते हुये, क्षमादान भी कर, भारत का इतिहास ही बदल डाला। गुरु जी ने बाल्य-काल से लेकर ज्योति-जोत समाने तक एक विलक्षण इतिहास रचा है। दक्षिण में नांदेड़ की पावन धरती पर गोदावरी नदी के किनारे अपना ज्योति-जोत समाने का समय निकट जानकर गुरु जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुआई प्रदान कर खालसा पंथ को 'गुरू मानिओ ग्रंथ' का आदेश दिया।

यात्रा श्री पटना साहिब की

-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल*

पटना साहिब का सिक्ख इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश-स्थान (जन्म-स्थान) है। गुरु जी ने पौष शुक्ल पक्ष सप्तमी, संवत् १७२३ को इसी शहर में जन्म लिया था। गुरु साहिब ने स्वयं फरमाया है-- ''तही प्रकास हमारा भयो॥ पटना सहर बिखै भव लयो॥'' दशमेश पिता ने बचपन के प्रारंभिक छः वर्ष यहीं पर बिताए।

यह सिक्खों के लिए अत्यंत पवित्र भूमि है। पांच तख्त साहिबान में से एक तख्त साहिब यह भी है। गंगा के दाहिने किनारे पर स्थित २५०० वर्ष पुराने इस नगर को श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु तेग बहादर साहिब और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के धन्य चरणों से पवित्र होने का गौरव प्राप्त हुआ है।

यहां आना और ऐतिहासिक गुरुधामों के दर्शन करना प्रत्येक नानक नामलेवा की हार्दिक अभिलाषा रहती है। यही कारण है कि यहां वर्ष भर संपूर्ण भारत और विदेशों से श्रद्धालुओं के आने का तांता लगा रहता है।

अकाल पुरख की अपार बख़्शिश हुई और अक्तूबर माह के अंतिम सप्ताह में मुझे भी अपनी सुपत्नी सरदारनी रणजीत जीवन कौर के साथ यहां आकर दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हो ही गया।

पटना साहिब एयरपोर्ट पर पहुंचते ही वहां सबसे पहले भेंट हुई एक अमृतधारी सिक्ख युवक लछमन सिंघ से। इस युवक ने अपनी स्कार्पियो कार में श्री पटना साहिब के समस्त गुरुधामों के दर्शन कराने की ज़िम्मेदारी ली और अगले चार दिनों तक यह सुंदर साबितसूरत युवा हमारे साथ ही रहा।

ऐतिहासिक नगर पटना साहिब

पटना साहिब गंगा नदी के तट पर स्थित बिहार राज्य की राजधानी है। महात्मा बुद्ध के समय इसे 'पाटलिग्राम' के नाम से जाना जाता था, लेकिन बाद में इसका नाम 'पाटलिपुत्र' प्रचलन में आया। बुद्ध के समकालीन महाराजा अजातशत्रु ने इस शहर का भरपूर विकास किया और उसके उत्तराधिकारियों ने इसे अपनी राजधानी बनाया।

मौर्य वंश के शासन-काल के दौरान यह नगर और भी प्रसिद्ध हो गया। तब यह १४ किलोमीटर लंबा था। यह लम्बाई में गंगा के तट पर स्थित था और इसकी चौड़ाई ढाई किलोमीटर से अधिक नहीं थी। आज भी इसका आकार कुछ-कुछ वैसा ही है। यह शहर सम्राट

*१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना, फोन: ६२३९६-०१६४१

अशोक की राजधानी भी रहा।

मौर्य वंश के अंत के बाद पटना शहर का महत्व घट गया। बाद में मुगलों और अंग्रेजों ने नगर के विकास की ओर ध्यान दिया। अब यह नगर बिहार का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण नगर है।

तख्त श्री हरिमंदर जी

सबसे पहले हम तख्त श्री हरिमंदर जी पहुंचे। पवित्र गुरुधाम के दर्शन करते ही हृदय में आनंद का सागर हिलोरे मारने लगा। यात्री निवास में रहने के लिए कमरा मिला १०९ नंबर, बिल्कुल निशान साहिब के सामने। कमरे का दरवाजा खुलते ही तख्त साहिब के दर्शन हो जाते। गुरबाणी-गायन की मधुर ध्वनि तो निरंतर कानों में झर रही थी।

यह पटना साहिब का मुख्य गुरुधाम है। दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म (प्रकाश) यहीं पर हुआ था। पहले यह सालस राय जौहरी का आवास था। श्री गुरु नानक देव जी उदासियों के समय यहां तीन महीने तक रहे थे। बाद में सालस राय ने अपने आवास का नाम 'संगत' कर दिया। कालान्तर में इसे 'छोटी संगत' के नाम से जाना जाने लगा। १६६६ ई. में नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब यहां आये।

सबसे पहले इसकी इमारत का निर्माण महाराजा रणजीत सिंघ ने करवाया था। बाद में समय-समय पर इसके भवन का विस्तार किया गया। १८८७ ई. में पटियाला, जींद और फरीदकोट रियासतों के राजाओं ने और अधिक निर्माण कराया। १९३४ ई. में बिहार में आए भीषण भूकंप से इस इमारत को भारी क्षति पहुंची थी। वर्तमान नई इमारत का निर्माण १९५७ ई. में संत निश्छल सिंघ और संत करतार सिंघ की देखरेख में किया गया। इस प्रकार इसका वर्तमान स्वरूप १९५७ ई. में पूरा हुआ।

१९३० ई. तक इस गुरुधाम का प्रबंधन महंतों के पास था। इसके बाद पांच लोगों की एक कमेटी बनाकर इसका प्रबंधन उसे सौंप दिया गया। इसका संरक्षक जिला सत्र न्यायाधीश को बनाया गया। १९५६ ई. में १५-सदस्यीय समिति का गठन किया गया और गुरुधाम का प्रबंधन उसे सौंप दिया गया। उस समिति में लगभग सभी सिक्ख पंथों/कमेटियों का प्रतिनिधित्व था।

अब श्री पटना साहिब के समस्त गुरुधामों की व्यवस्था स्थानीय प्रबंधक कमेटी देखती है।

यह पांच मंजिला गुरुधाम बहुत सुंदर है, जिसके कमल समान सुनहरे गुंबद दूर से दिखाई देते हैं। किनारे पर बने गुंबदों को भी सोने की पत्ती से ढका गया है। रात के समय तो यहां का दृश्य मन को मोह लेता है। प्रकाश की ऐसी सुंदर व्यवस्था है कि गुरुधाम की इमारत अलग-अलग रंगों में इतनी मनोहारी लगती है कि बस, क्या कहना।

यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब और श्री दशम ग्रंथ साहिब, दोनों का प्रकाश होता है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब और श्री गुरु

गोबिंद सिंघ जी की स्मृति से जुड़ी कुछ वस्तुएं यहां संरक्षित हैं-- दशमेश पिता जी का पालना चार तीर, एक छोटी कृपाण, एक छोटा खंडा, एक छोटा खंजर, चंदन की कंघी, हाथी दांत की खड़ाऊं, अनेक हुकमनामे आदि।

सुबह की अरदास के पश्चात भाई (ग्रंथी) जी ने संगत को इनके दर्शन करवाए। इन पवित्र वस्तुओं के दर्शन करके हृदय में एक विशेष आध्यात्मिक अनुभव का संचार होता प्रतीत हुआ।

पहले ही दिन हम पटना साहिब के गुरुधामों के दर्शन करने के लिए निकले। सबसे पहले हम गुरुद्वारा कंगन घाट साहिब पहुंचे।

गुरुद्वारा कंगन घाट साहिब

यह गुरुधाम तख़्त श्री हरिमंदर जी के बिल्कुल क़रीब है। पहले गंगा इसी घाट के पास से बहती थी। दशमेश पिता यहीं पर जलक्रीड़ा किया करते थे और नाव पर सवार होकर गंगा नदी पर सैर करने जाया करते थे। गुरु साहिब के बचपन की कई साखियाँ इस स्थान के साथ जुड़ी हुई हैं। यहां के भाई जी ने बड़े प्रेम से इस गुरुधाम के इतिहास से अवगत कराया। यहां से हम गुरुद्वारा गऊघाट साहिब के दर्शन करने के लिए निकले।

गुरुद्वारा गऊघाट साहिब

गुरुद्वारा 'गऊघाट' साहिब आलमगंज इलाक़े में स्थित है। इस स्थान पर श्री गुरु नानक देव जी अपनी उदासी के दौरान भाई जैता नामक एक धर्मपरायण व्यक्ति के यहाँ रुके थे। भाई जैता श्री गुरु नानक देव जी के सिक्ख बन गये और अपने गृह स्थान पर 'गायघाट संगत' या 'गऊघाट संगत' का गठन किया। स्थानीय परंपरा के अनुसार, इस स्थान से गुरु जी ने हीरे का मूल्य जानने के लिए भाई मरदाना को शहर में भेजा, जिसके परिणामस्वरूप सालस राय जौहरी गुरु जी के सिक्ख बन गए। सालस राय ने गुरु जी को अपने घर आमंत्रित किया और वहां एक 'छोटी संगत' की स्थापना की। इस गुरुधाम में माता गुजरी जी की चक्की और भाई मरदाना जी की रबाब सहेजी हुई है। यहां दर्शन करते हुए हृदय में गुरु साहिबान के चरणों की छोह महसूस होती रही। इसके बाद हम गुरुद्वारा हांडी साहिब पहुंचे।

गुरुद्वारा हांडी साहिब

यह गुरुद्वारा पटना शहर के उपनगर दानापुर में सुशोभित है। यह तख़्त श्री हरिमंदर जी से पश्चिमी दिशा की ओर २० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह वो पवित्र स्थान है जहां जमना माई (या प्रधानी) ने नवम् पातशाह के परिवार के लिए रात में मिट्टी की हांडी में खिचड़ी बनाई थी। माई जमना का यह घर बाद में 'हांडी वाली संगत' के नाम से मशहूर हो गया। अब यहां मौसमी नदी 'सोम' के तट पर सुंदर गुरुद्वारा बना हुआ है।

जब हम इस पवित्र स्थान पर पहुंचे, तो वहां सेवा करने वाले भाई जी ने बड़े प्रेम से इस गुरुधाम के इतिहास से अवगत कराया और लंगर में बड़े प्रेम से खिचड़ी का प्रसाद छकाया।

अगले दिन सुबह गुरुद्वारा बाल लीला साहिब के दर्शन करने का विचार बना।

गुरुद्वारा बाल लीला साहिब

यह गुरुद्वारा तख्त श्री हरिमंदर जी के बिल्कुल निकट वाली गली में है। यहां राजा फतेह चंद मैनी का घर हुआ करता था। राजा और उसकी धर्मपरायण पत्नी गुरु-घर के प्रेमी थे। राजा का कोई पुत्र नहीं था। बाल गोबिंद राय जी अपने बाल साथियों के साथ बाल- लीलाएं करते हुए राजा फतेह चंद के घर पहुंच जाया करते थे। रानी गुरु जी के लिए तली हुई जई, साबुत भोजन और दूध तैयार करती। एक बार जब बाल गोबिंद राय जी अपने साथियों के साथ खेल रहे थे, तो वे इनके घर आकर पालने में बैठ गए और खाने के लिए कुछ मांगा। घर में उस समय चने ही थे। रानी चने लेकर ही आ गई। बाल गोबिंद राय ने प्रेम से चने ग्रहण किए। कालांतर में राजा फतेह चंद मैनी के घर एक पुत्र का जन्म हुआ। घर में ख़ुशी का ठिकाना न रहा। राजा और उनकी धर्मपरायण पत्नी ने अपने घर को 'संगत' में बदल दिया जो 'मैनी संगत' के नाम से प्रसिद्ध हुई। अब राजा के पुराने भवन का एक हिस्सा हटाकर नया गुरुधाम बनाया गया है। इस गुरुद्वारे की दर्शनी ड्योढ़ी सन् १६६८ अर्थात् संवत् १७२५ की निर्मित है। इस पर मूल-मंत्र उत्कीर्ण है। यहां बाल गोबिंद राय की चरण पादुकाएं और जोड़ा संरक्षित है। साथ ही यहां वह गुलेल और पत्थर भी सहेज कर रखे गये हैं जिनसे बाल गोबिंद राय महिलाओं के पानी के घड़े फोड़ दिया करते थे। बाल गोबिंद राय के छोटे-से जोड़े और उनके खिलौनों के दर्शन करके मन में वात्सल्य का भाव उमड़ आया। यहां गुरु साहिब के हस्ताक्षरों वाली एक पवित्र बीड़ भी संरक्षित है।

यहां गुरुद्वारे में आज भी पूरी-चने का प्रसाद बांटा जाता है। हमने गुरुधाम के बरामदे में बैठकर पूरी-चने का प्रसाद छका और लंगर में जाकर चाय पी।

इसके पश्चात हमने नालंदा होते हुए राजगीर जाने का कार्यक्रम बनाया।

गुरुद्वारा शीतल कुंड साहिब, राजगीर

पटना से लगभग सौ किलोमीटर दूर स्थित राजगीर भी एक बहुत पुराना शहर है। इसका पुराना नाम 'राजगृह' था और यह मगध साम्राज्य की पुरानी राजधानी रहा है। वैसे इस नगर का वर्णन महाभारत में भी मिलता है। यह जरासंध की राजधानी था और भीम ने इसी स्थान पर जरासंध का वध किया था।

यह नगर पथरीले पठार पर बसा हुआ है, इसलिए यहां पानी की समस्या सदा से रही है। कदाचित् इसी कारण के चलते बाद में मगध सम्राटों ने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र को बना लिया।

अपनी उदासियों के समय श्री गुरु नानक देव जी यहां भी आये थे। कहते हैं कि यहां २३ जलकुंड थे, परंतु हर कुंड का जल गर्म होने के कारण पीने योग्य नहीं था।

प्रथम पातशाह की कृपा से एक कुंड का

जल शीतल हो गया और पीने लायक बन गया। अब यहां एक सुंदर गुरुधाम सुशोभित है।

इस गुरुधाम की कार सेवा बाबा अजायब सिंघ जी ललतों कलां, लुधियाना वाले की देखरेख में हुई। अब यहां एक अति आधुनिक यात्री निवास है। गुरु का लंगर चौबीसों घंटे चलता है।

शाम को हम वापस पटना साहिब लौट आए।

अगले दिन हमने सुबह गुरुद्वारा साहिब गुरु का बाग़ के दर्शन किये।

गुरुद्वारा साहिब गुरु का बाग़

यह गुरुधाम तख्त श्री हरिमंदर जी से मात्र एक किलोमीटर दूर पुराने शहर के कोने में पूरबी छोर पर है। यहीं पर नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब असम से लौटते समय नवाब रहीम बख्श और नवाब करीम बख्श के बगीचे में रुके थे। उस समय यह बगीचा सूखा था। जब गुरु साहिब ने बगीचे में क़दम रखा तो बगीचे के पेड़ों में पत्ते और फूल उग आए। गुरु जी के आगमन से सूखी शाखाएँ हरी हो गईं। पहरेदारों ने नवाबों को सूचना दी। वे आये और आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने वह बगीचा गुरु जी को समर्पित कर दिया। गुरु जी का आगमन सुनकर गुरु-परिवार और पटना की संगत बाग़ में पहुंच गई। यह घटना सन् १६७१-७२ की है। यहां नवम् पातशाह पहली बार बालक गोबिंद राय जी से मिले। जिस इमली के पेड़ के नीचे गुरु जी विराजमान हुए थे, वहां पहले एक छोटा-सा गुरुद्वारा बनाया गया था, जिसे १९७१-७२ ई. में एक विशाल सुंदर गुरुद्वारे के रूप में सुशोभित कर दिया गया। साढ़े छः एकड़ परिसर वाले इस गुरुद्वारे में अब भी फलों के पेड़ लगे हुए हैं। यहां बाग़ में पौधा रोपने की परंपरा है। हमने भी सरबत्त के भले की अरदास करते हुए बाग़ में आम का एक बूटा लगाया।

वापसी में भाई लछमन सिंघ हमें पटना एयरपोर्ट पर छोड़ गये। फ्लाइट में हमें इंग्लैंड से आया चालीस सिंघ-सिंघनियों का जत्था मिला, जो पांच तख्त साहिबान की यात्रा पर भारत आया हुआ था और अब तख्त श्री केसगढ़ साहिब जा रहा था। फ्लाइट में भी गुरु-स्नेही संगत का संग मिलना गुरु-कृपा द्वारा बना संयोग ही कहा जा सकता है।

इस प्रकार दिव्य अनुभूति प्रदान करने वाली पटना साहिब की यात्रा संपूर्ण हुई।

भाई नंद लाल जी की दृष्टि में गुरु-संस्था

-डॉ. पलविंदर कौर*

भाई नंद लाल जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अति प्रिय सिक्ख थे। उनकी महानता इस बात से भी पता चलती है कि भाई गुरदास जी के बाद भाई नंद लाल जी की रचना को सिक्ख जगत में आदरणीय स्थान प्राप्त है, जिस कारण उनकी रचना का भी संगत में कीर्तन किया जाता है।१ भाई नंद लाल जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबारी कवि थे। 'गोया' उनका तख़ल्लुस था। उनका जन्म मुंशी छज्जू मल्ल के घर सन् १६३३ ई. में हुआ।२ आपके पिता फारसी के प्रकांड विद्वान थे, जिनसे आपने भी फ़ारसी की विद्या प्राप्त की। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की हजूरी में रहते हुए आपने फ़ारसी भाषा में बहुत साहित्य सृजन किया।३ इस साहित्य में जहाँ उन्होंने सिक्खी मार्ग और आध्यात्मिकता के बारे में अपने अनुभव के माध्यम से अनमोल व्याख्या की, वहीं उन्होंने गुरु जी की स्तुति भी गायन की है।

इस आलेख में भाई नंद लाल जी की दृष्टि में गुरु-संस्था को सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य में समझने की कोशिश की जा रही है। भाई नंद लाल जी की नज़र में गुरु संस्थागत रूप धारण करता है। भाई साहिब ने गुरु-प्यार में लीन होकर दस गुरु साहिबान की एकता दृढ़ करवाई है। वर्णनीय है कि सिक्ख संस्थाओं ने सिक्ख धर्म के विकास में अहम भूमिका निभाई है। सिक्ख धर्म की समूची संस्थाओं में से सिरमौर संस्था 'गुरु-संस्था' है। इसे केंद्रीय, बुनियादी, मूलभूत या आधारशिला भी कहा जा सकता है।

भाई नंद लाल जी गुरबाणी की तर्ज़ पर फरमान करते हैं कि चाहे हज़ारों चाँद चमकते हों, मगर गुरु के बिना सारा जहान अंधकारमयी है :

गर फिरोज़द हज़ार मिहरो माह
आलमे दां जुज़ ऊ तमाम सिआह ।।

भाई साहिब गुरु-विहीन मानवीय जीवन को झाड़ियों और काँटों के साथ भरा हुआ खेत समझते हैं :

ग़ैर सतिगुरु हमा-ब-दां मानद
कां चूनां ज़रइ बार-वर दानद ।।

भाई नंद लाल जी ने अपनी रचनाओं में पूरे गुरु के बारे में बहुत संकेत दिए हैं :

आबि हयाति मा सख़ुनि पीरि कामिल असत।
दिलहाइ मुर्दा रा बिकुनद ज़िंदा ओ खलास ।।

अर्थात् पूरे और कामिल सतिगुरु का शब्द हमारे लिए अमृत है। यह मुर्दा दिलों को पुनर्जीवित और मुक्त कर देता है। इसी प्रकार भाई साहिब बताते हैं कि सबकी इच्छा पूर्ण होना

*सहायक प्रोफेसर, धर्म अध्ययन विभान, श्री गुरु ग्रंथ साहिब वर्ल्ड यूनिवर्सिटी, श्री फतिहगढ़ साहिब— १४०४०६, फोन : ९६४६०-०४१५१

सतिगुरु के मिलाप द्वारा ही संभव है। बिना गुरु के कोई भी ईश्वर तक नहीं पहुँच सकता :

मुरशदि कामिल हमा रा आरज़ू
गैरि मुरशद कस न याबद रहि बदू।।

भाई नंद लाल जी के अनुसार पूर्ण गुरु वही ही हो सकता है जिसकी वाणी में से ईश्वरीय सुगंधि स्पष्ट रूप से महकती हो :

मुरशदि कामिल हमा बाशद हमा
कज़् कलामश बूइ हक आदि अया।।

भाई नंद लाल जी की दृष्टि में गुरु और परमात्मा में कोई अंतर नहीं। वो स्वयं सतिगुरु है, वही निरंकार है। इसके साथ ही वो साधसंगत का मित्र और यार है :

हू अल-सतिगुरु वल-निरंकारना
हू अल-साध संगत हू अल यारना।।

गुरु को संस्थागत रूप में पेश करने से पूर्व भाई नंद लाल जी श्री गुरु नानक देव जी की प्रशन्सा करते हुए कहते हैं कि श्री गुरु नानक पातशाह सच्चे धर्म वाले हैं। उनके जैसा दरवेश संसार में कोई नहीं आया :

नामि ऊ शाहि नानक हक केश
कि निआ इद चुनूँ दिगर दरदेश।।

श्री गुरु नानक पातशाह नारायण का स्वरूप हैं। निस्संदेह वे निरंजन और निरंकार का रूप हैं :

गुरू नानक आमद नाराइण सरूप
हमाना निरंजन निरंकार रूप।।

श्री गुरु अंगद देव जी दो जहान के मुरशिद हैं। वे गुनहगारों के लिए रहमत हैं :

गुरु अंगद आँ मुरशदुल-आलमी
ज़ि फज़लि अहद रहिमतुल मज़नबीन।।

श्री गुरु अमरदास जी उस महान घराने में से हैं, जिनकी हस्ती को ईश्वर के फ़ज़ल और कर्म से सामग्री मिली है :

गुरू अमरदास आं गरामी नज़ाद
ज़ि अफज़ालि हक हसतीअश रा मुआद।।

श्री गुरु रामदास जी सारी कायनात की पूँजी हैं। वे पूर्ण आस्था-सफ़ाई के राज के रखवाले हैं :

गुरू रामदास आं मताअ उल-वरा
जहांबानि इकलीम सिदको सफा।।

श्री गुरु अरजन देव जी बख्शिश और उपमा का रूप हैं। ईश्वरीय शान की वास्तविकता के अन्वेषक हैं :

गुरू अरजन जुमला जूदो फज़ाल
हकीकत पज़ोहदाई हक जमाल।।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी बख्शिश का रूप हैं, जिस कारण अभागे और मुरझाए हुए लोग भी मुक्त हो गए :

गुरू हरगोबिंद आं सरापा करम
कि मकबूल शुद जू शकी ओ दज़म।।

श्री गुरु हरिराय साहिब जी सत्य के पालनहार भी हैं और सत्य के धारक भी हैं। वे सुलतान भी हैं और दरवेश भी हैं :

हक परवर हक केश गुरु करता हरि राइ
सुलतान हम दरवेश गुरु करता हरि राइ।।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब कृपा और बख्शिश का रूप हैं। ईश्वर के अपने सभी निकटवर्तियों में से सबसे अधिक लोकप्रिय हुए हैं :

गुरू हरि किशन आं हमा सब फज़लो जूद
हक्कश अज हमा सब खासगां ब-सतूद।।

श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब सिर से लेकर पैरों

तक ऊँचाई और महानता के भंडार हैं, ईश्वर की शान-ओ-शौकत की महफ़िल की रौनक बढ़ाने वाले हैं :

गुरू तेग़ बहादर आं सरापा अफज़ाल
ज़ीनत-आराइ महि फलि जाहो जलाल ।।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी गरीबों के रक्षक हैं। वे ईश्वर से स्वीकृत हुए हैं :

नासिरो मनसूर गुर गोबिंद सिंघ
ईज़दि मनज़ूर गुरू गोबिंद सिंघ ।।

भाई नंद लाल जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की संगत में रहते हुए उनकी अपार बख्शिशें प्राप्त की थीं। उनके प्यार में भाई साहिब ने अपनी रचना 'गंजनामा' में उनकी अति प्रशन्सा की है।४ उनकी नज़र में सभी गुरु पातशाह ज्योति-स्वरूप हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ज्योति-स्वरूप के प्रति उनके वचन हैं :

फैजि सुबहान जाति गुर गोबिंद सिंघ ।
नूरि हक लमआत गुर गोबिंद सिंघ ।।

तात्पर्य- श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सर्वशक्तिमान वाहिगुरु की कृपा हैं। वे ईश्वरीय नूर की किरणों भरी रौशनी हैं। भाई नंद लाल जी गुरु-संस्था के रूप में सामूहिक रूप से दस गुरु साहिबान की एकता के बारे में इस प्रकार वर्णन करते हैं :

नानक सो अंगद गुर देवना
सो अमरदास हरि सेवना ।
सो रामदास सो अरजना
सो हरि गोबिंद हरि परसना ।
सो करता हरि राइ दातारनं
सो हरि क्रिशन अगंम पारनं ।
सो तेग़ बहादर सति सरूपना
सो गुर गोबिंद सिंघ हरि का रूपना ।।
सभ एको एको एकना
नहीं भेद न कछू भी पेखना ।।

भाई नंद लाल जी के शब्दों में गुरु- संस्था के अंदर की सांझी कड़ी नूर की है :

दर मअनी यके व दर सूरत दो मशअले जां अफ़रोज ।।

अर्थात् दिलों को नूरो-नूर करने वाली इन नूरी मिशालों श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अंगद देव जी में दरअसल ज्योति एक ही है, बाहरी शरीर दो दिखाई देते हैं। गुरु-ज्योति की एकता दृढ़ करवाते हुए भाई नंद लाल जी स्पष्ट करते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी भी वही हैं, श्री गुरु अंगद देव जी भी वही हैं, बख्शिश और महान-उपमा के मालिक श्री गुरु अमरदास भी वही हैं। वही श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन देव जी हैं। सबसे बड़े और बेहतर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब भी वही हैं। वही श्री गुरु हरिराय साहिब कर्ता गुरु हैं , जिन्हें प्रत्येक वस्तु का उल्टा-सीधा दृश्य स्पष्ट दिखाई दे जाता है। वही श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब हैं, जिनसे प्रत्येक व्यक्ति की मुराद पूरी होती है। वही श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब हैं, जिनके नूर से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी प्रकट हुए हैं। वही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हैं और वही श्री गुरु नानक देव जी हैं। उनके शब्द जवाहरात और मानक मोती हैं :

हमू नानक असतो हमू अंगद असत
हमू अमरदास अफ़ज़लो अमजद असत ।।
हमू रामदासो हमू अरजन असत

हमू हरिगोबिंद अकरमो अहिसन असत।।
हमू हसत हरिराय करता गुरु
बद आशकारा हम पुशतो रू ।।
हमू हरिकिशन आमदा सर-बुलंद
अजो हासिल उमीदि हर मुसतमंद।
हमू हसत तेगि बहादर गुरु
कि गोबिंद सिंघ आमद अज नूरि ऊ।।
हमू गुरू गोबिंद सिंघ हमू नानक असत
हमा शबदि ऊ ज़ौहरो मानक असत।।

भाई नंद लाल जी इसी प्रकार एक जगह और गुरु-ज्योति के घटनाक्रम को बयान करते हैं :

नानक सो अंगद गुर देवना
सो अमरदास हरि सेवना।।
सो रामदास सो अरजना।।
सो हरि गोबिंद हरि परसना।।
सो करता हरि राइ दातारनं।।
सो हरि क्रिशन अगंम अपारनं।।
सो तेग़ बहादर सति सरूपना।।
सो गुर गोबिंद सिंघ हरि का रूपना।।
सभ एको एको एकना।।
नही भेद ना कछू भी पेखना।।

वर्णनीय है कि उक्त संस्थागत रूप में गुरु-ज्योति ने शबद की युक्ति के माध्यम से विचरण किया। गुरु के संस्थागत रूप को समझने के लिए यह जानना ज़रूरी है कि परमात्मा 'शबद' रूप है। 'शबद' केवल हुक्म है तो गुरु परमात्मा है। जब यह ज्योति में तबदील होता है तो गुरु देह धारण करता है (जैसे दस गुरु साहिबान)। यह देह के बंधनों में होता हुआ भी शबद-रूप होता है। गुरु-ज्योति की एक निश्चित युक्ति रही है, जिसके द्वारा उसने जगत का कल्याण किया। वर्णनीय है कि सिक्ख धर्म में 'शबद' को 'खसम की बाणी' कह कर महामंडित किया गया है। इस 'शबद' का बाणीकारों ने पहले आप अनुभव किया, फिर उस अनुभव को 'बाणी' के द्वारा प्रकट किया।[6]

गुरबाणी और बाणी दोनों शब्द 'शबद' के अर्थ में ही आए हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने वेईं प्रवेश के बाद 'शबद' का जो प्रवाह चलाया, उनके नौ उत्तराधिकारियों ने भी उस प्रवाह को निरंतर जारी रखा। इसको गुरबाणी में 'लंगर चले गुर शबद' के प्रवचनों के माध्यम से दरसाया गया है।

सिक्ख धर्म में अकाल पुरख, गुरु और शबद एक-दूसरे के पूरक नहीं, बल्कि एक ही रूप हैं। अकाल पुरख भी शबद-रूप है, बाणी भी शबद है और गुरु भी शबद-रूप ही है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ज़िक्र आता है कि पारब्रह्म ने अपना आप गुरु में समा कर शबद-गुरु का प्रसार किया :

गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ।।
(पन्ना १२७९)

दस गुरु साहिबान की एकता तभी सिद्ध हो सकती है, यदि 'शबद' को गुरु माना जाये। सभी गुरु साहिबान के (शरीर) तो अलग-अलग थे, परन्तु उनमें ज्योति एक ही थी, अर्थात् उनके द्वारा प्रकट हो रही रौशनी (ज्ञान) एक ही थी :

इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि।।
(पन्ना ६४६)

श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक चला गुरुआई-प्रसार, अंततः 'शबद' की गुरु के रूप में स्थाप्ति पर समाप्त होता

है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'शबद' को गुरुआई प्रदान कर शख़्सी गुरु का अस्तित्व सदा के लिए ख़त्म कर दिया। भाई नंद लाल जी इस दैवी घटनाक्रम को इस प्रकार बयान करते हैं :

तीन रूप है मोहि के सुणहु नंद चित लाइ ।।
निर्गुण सरगुण गुरसबद है कहो तोहि समझाइ ।।

भाई नंद लाल जी द्वारा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को उनके अंतिम समय में विनती करने पर गुरु साहिब ने उक्त बात दृढ़ करवाई कि गुरु-ज्योति के वास्तव में तीन रूप है। पहला, निर्गुण रूप है, जो किसी की समझ में नहीं आता। दूसरा, सगुण रूप है, जो खालसा पंथ के अधीन है[६] और तीसरा शबद रूप है।[७]

उपरोक्त समूची विचार-चर्चा से स्पष्ट है कि गुरबाणी की रोशनी में भाई नंद लाल जी ने गुरु-संस्था को सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य में रख कर बड़े भावपूर्ण शब्दों में बयान किया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सिद्धांत के अनुसार गुरु- संस्था के तीन पक्ष हैं– ज्योति, युक्ति और काया।[८] ज्योति से भाव सत्य का प्रकाश या सिद्धांत है। युक्ति वो रहित व नीति है, जिसके द्वारा सत्य सम्बंधी मिले प्रकाश या सिद्धांत को जीवन में जीना है। काया वो माध्यम है, जिसकी सहायता से ज्योति की युक्ति धारण की जाती है। गुरुआई के उक्त तीनों ही पक्ष सदा स्थिर रहे हैं, चाहे इनके नाम व रूप बदलते रहे हैं। कहा जा सकता है कि दस गुरु साहिबान में ज्योति, युक्ति और काया के तीनों पक्ष मौजूद थे। गुरबाणी या शबद उनकी ज्योति का प्रकाश है। उनके द्वारा की गई नाम–भक्ति/ सेवा तथा अन्य कार्य, उनकी युक्ति का अंग हैं और काया पलट कर गुरु-सिक्ख/ गुरु-पंथ, संगत या खालसा-पंथ में आ गई है।

संदर्भ-सूची :

१. "संगत में कीर्तन केवल गुरबाणी या इसकी व्याख्या-स्वरूप–– रचना भाई गुरदास जी और भाई नंद लाल जी की रचना का ही हो सकता है।" (सिक्ख रहित मर्यादा, पृष्ठ १५)

२. गंडा सिंघ (सम्पा), भाई नंद लाल ग्रंथावली, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, १९९४ (द्वितीय संस्करण), पृष्ठ १-२.

३. भाई साहिब की रचनायें हैं– ज़िन्दगीनामा (फ़ारसी), गज़लियात अर्थात् दीवानि-गोया (फ़ारसी), तौसीफ–ओ–सना और खातिमा (फ़ारसी), गंजनामा (फ़ारसी), जोति बिगास (फ़ारसी पद्य), जोति बिगास (पंजाबी पद्य), रहितनामा अते तनखाहनामा (पंजाबी पद्य), दसतूरुल–इंशा (फ़ारसी, गद्य) तथा अरजुल–अल्फाज (फ़ारसी, पद्य)।

४. देखो : भाई नंद लाल ग्रंथावली, पृष्ठ १८२–१९०.

५. जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब,पन्ना ७२२), हउ आपहु बोलि न जाणदा मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना-७६३.)

६. श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गुरुआई ग्रंथ–पंथ को दी थी, जिसके बारे में संकेत भाई नंद लाल जी भी देते हैं। सरगुण रूप के बारे में भाई साहिब लिखते हैं : निरगुण रूप नहीं देखीए सरगुण सिख अधीन॥ (भाई नंद लाल ग्रंथावली, पृष्ठ २२२.)

७. मेरा रूप ग्रंथ जी जाण इस में भेद नहीं कुछ मान॥ (भाई नंद लाल ग्रंथावली, पृष्ठ २२२)

८. जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ –९६६.)

शहीद बाबा दीप सिंघ जी

*- डॉ. हरबंस सिंघ**

बाबा दीप सिंघ जी सिक्ख इतिहास की एक अजीम शख्सियत हैं। वे पूर्ण गुरसिक्ख, महान योद्धा और उच्च कोटि के विद्वान थे। श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब की परिक्रमा में स्थित गुरुद्वारा बाबा दीप सिंघ जी शहीद और गुरुद्वारा श्री रामसर साहिब के निकट गुरुद्वारा शहीदगंज बाबा दीप सिंघ जी, उनकी अमर यादगारें हैं। गुरुद्वारा साहिब की पवित्रता के लिए की गई कुर्बानियों को सिक्ख इतिहास में कई बार दोहराया गया है। २०वीं सदी में इसकी मिसाल गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब, गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब, गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब तरनतारन, गुरुद्वारा गुरु का बाग और गुरुद्वारा गंगसर साहिब जैतो के मोर्चों में शहीद हुए सिंघों ने पेश की। अकाली मोर्चों के दौरान इन शहीद सिक्खों को बाबा दीप सिंघ जी की कीमती विरासत प्रेरित कर रही थी, जो ७५ वर्ष की आयु में भी श्री दरबार साहिब की पवित्रता को कायम रखने के लिए जाँनिसार सिंघों का जत्था लेकर श्री दमदमा साहिब (तलवंडी साबो) से श्री अमृतसर साहिब के लिए चल पड़े थे। आप जहान खान की फौज के साथ लड़ते हुए सन् १७५७ ई. में शहीद हुए थे।

प्रारंभिक जीवन : बाबा दीप सिंघ जी का जन्म १४ मार्गशीर्ष, १७३९ बिक्रमी (सन् १६८२ ईस्वी) को माझा क्षेत्र के गाँव पहुविंड, तहसील पट्टी, ज़िला तरनतारन में हुआ। आप जी के पिता भाई भगता जी और माता जीऊणी जी थे। पहुविंड गाँव श्री अमृतसर साहिब से ४० किलोमीटर दूर, दक्षिण-पश्चिम दिशा में आबाद है। भाई भगता जी के दो पुत्र थे-- बड़ा-- दीपा (बाबा दीप सिंघ जी) और छोटे का नाम लाल सिंघ था। बाबा दीप सिंघ जी के प्रारंभिक जीवन के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं मिलती।

बाबा दीप सिंघ जी का बचपन और युवावस्था के दिन गाँव के आस-पास ही बीते। आप जी ने गुरमुखी अक्षरों का ज्ञान और गुरबाणी की शिक्षा अपने पिता जी से प्राप्त की। आप जी को शारीरिक खेल खेलने और घुड़सवारी करने का बहुत शौक था। हृष्ट-पुष्ट काया, चौड़ा माथा, चौड़ी छाती, दमकदार चेहरा था। आप शुरू से ही निडर, साहसी और स्वाभिमानी स्वभाव के मालिक थे। आप गुरसिक्खों की संगत करते और कृषि-कार्यों में अपने पिता का हाथ बंटाते। माता-पिता से ग्रहण की धार्मिक शिक्षा के कारण आपके स्वभाव में

*३-सी/३८, द्वितीय तल, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, नई दिल्ली— ११०००५, फोन : ०११-६५५८५३९५

अति नम्रता और मिठास थी। सिक्खी पृष्टभूमि और किसानी जीवन ने उनमें सादगी, दृढ़ता और आत्मविश्वास जैसे गुणों को मज़बूत बना दिया था। १७०० ई. के आस-पास बाबा दीप सिंघ जी का परिवार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दर्शन करने के लिए श्री अनंदपुर साहिब आया। तब बाबा दीप सिंघ जी की आयु १८ वर्ष के लगभग थी। वे श्री अनंदपुर साहिब के आध्यात्मिक वातावरण और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जाहो-जलाल से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने श्री अनंदपुर साहिब ही टिके रहने का फ़ैसला कर लिया। वे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के कर-कमलों से खंडे-बाटे का अमृत छक कर 'दीपा' से 'दीप सिंघ' बन गए। इनके माता-पिता भी अमृत छक कर 'भगतू' से 'भगत सिंघ' और 'जीऊणी' से 'जीऊण कौर' बन गए। श्री अनंदपुर साहिब निवास के दौरान बाबा दीप सिंघ जी अपना समय सैनिक अभ्यास, लंगर और संगत की सेवा में बिताने लगे। दिन का बाकी समय वे गुरबाणी कंठस्थ करने और धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन में बिताया करते थे। उन पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बहुपक्षीय शख्सियत का बहुत गहरा प्रभाव था। भाई धिआन सिंघ निरमले ने 'शहीद बिलास' में लिखा है :

सिदकी सिक्ख हूए वड पूरे,
दसम गुरू दे रहित हदूरे।
बहु गुर घर के काज सवारे,
निस दिन हरि जस मुखों उचारे।।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की निगरानी और भाई मनी सिंघ जी की संगत पाकर आप गुरबाणी और सिक्ख साहित्य के अच्छे विद्वान बन गए। शारीरिक तौर पर हृष्ट-पुष्ट और फुर्तीले होने के कारण उनकी गणना अच्छे सिक्ख सैनिकों में होने लगी। जब पहाड़ी राजाओं और मुग़ल फौज ने मिल कर श्री अनंदपुर साहिब पर हमले करने शुरू किये तो आपने श्री अनंदपुर साहिब में लड़ी गई लड़ाइयों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी आपकी बहुपक्षीय प्रतिभा के कारण आपसे बहुत प्यार किया करते थे। जब कुछ समय के लिए लड़ाई का ज़ोर ठंडा पड़ा तो बाबा दीप सिंघ जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का आदेश पाकर सिक्खी-प्रचार के लिए अपने गाँव लौट आए। वे श्री अनंदपुर साहिब में करीब पाँच वर्ष तक रहे थे।

पहुविंड से दमदमा साहिब (तलवंडी साबो): श्री अनंदपुर साहिब की लड़ाइयों के पश्चात् जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने किला अनंदगढ़ छोड़ा तो बाबा दीप सिंघ जी माझा क्षेत्र में थे। श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने के बाद गुरु-परिवार और गुरु के सिक्खों के साथ जो कुछ घटित हुआ वह रौंगटे खड़े कर देने वाला दुखांत है। सरसा नदी के किनारे मुग़ल और पहाड़ी राजाओं की फौज के साथ हुई टक्कर के दौरान गुरु जी का सारा परिवार बिखर गया। भाई उदै सिंघ, भाई जीवन सिंघ (भाई जैता जी) और

भाई बचित्तर सिंघ जैसे योद्धा शहीद हो गए थे। माता साहिब कौर तथा माता सुंदरी (सुंदर कौर) जी संग से बिछड़ कर भाई मनी सिंघ जी के साथ दिल्ली की तरफ चले गए थे। माता गुजरी जी, छोटे साहिबजादों को लेकर गंगू रसोइये के साथ उसके गाँव खेड़ी (सहेड़ी) पहुँच गए, जहाँ से उन्हें सरहिंद ले जाकर शहीद कर दिया गया। बड़े साहिबज़ादे चमकौर की जंग में शहीदी प्राप्त कर गए। गुरु जी माछीवाड़ा साहिब और श्री मुकतसर साहिब होते हुए तलवंडी साबो (दमदमा साहिब) पहुँचे। श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने के बाद बाबा दीप सिंघ जी दूसरी बार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से यहाँ आकर मिले थे। गुरु जी लगभग नौ माह तक यहाँ ठहरे थे। यहीं पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई मनी सिंघ जी, बाबा दीप सिंघ जी आदि प्रमुख सिक्खों की सहायता से श्री गुरु ग्रंथ साहिब को अंतिम रूप दिया था। जब आप तलवंडी साबो से दक्षिण के लिए रवाना हुए तो सिक्खी-प्रचार के उद्देश्य के साथ बाबा जी ने दमदमा साहिब निवास किया। बाबा दीप सिंघ जी के योग्य नेतृत्व और दिशा-निर्देश में दमदमा साहिब गुरमति एवं गुरबाणी के प्रचार-प्रसार का महान केंद्र बन गया। साहित्यिक गतिविधियों और गुरु की बख्शिशों के कारण इसको 'गुरु की कांशी' भी कहा जाता है।

विखंडित जत्थेबंदी को संगठित करना : दमदमा साहिब निवास के दौरान बाबा दीप सिंघ जी ने विखंडित सिक्ख फुलवारी को पुन: संगठित करना शुरू कर दिया। गुरबाणी के प्रचार और अमृत-संचार की लहर को तेज़ किया। गुरबाणी के गुटके लिख कर और लिखवा कर बाँटना तथा तलवंडी साबो आने वाली संगत को गुरबाणी के अर्थ-बोध के माध्यम से गुरमति की ऐसी प्रणाली शुरू की, जिसे आज हम 'दमदमी टकसाल' के नाम से जानते हैं। गुरबाणी के प्रचार के साथ-साथ बाबा दीप सिंघ जी ने सिक्खों को सैनिक प्रशिक्षण देने का कार्य भी आरंभ किया। बाबा दीप सिंघ जी के नेतृत्व में शिक्षा पाने वाले इन जाँनिसार सिंघों ने आने वाले समय में पंजाब के इतिहास में शानदार भूमिका अदा की। ये वे सिंघ थे, जो आगे चल कर बाबा दीप सिंघ जी द्वारा स्थापित 'शहीद मिसल' का ठोस आधार बने। शहीद मिसल की कुल संख्या २००० के करीब थी। इसने १७४९ ई. से १७९० ई.के बीच विदेशी हमलावरों के साथ ज़बरदस्त टक्कर लेकर पंजाब में खालसा राज की स्थापित के लिए बड़ा योगदान दिया। शहीद मिसल के प्रसिद्ध जरनैलों में भाई सुधा सिंघ, भाई शेर सिंघ, भाई हीरा सिंघ, भाई प्रेम सिंघ और भाई दरगाह सिंघ शामिल थे।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सहायता करना : नांदेड़ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पंथ के नेतृत्व के लिए बाबा बंदा सिंघ बहादुर को जत्थेदार नियुक्त किया था। उन्होंने अपने तरकश

में से पाँच तीरों की बखिशश कर कुछ प्रमुख सिंघों के साथ पंजाब के ज़ालिम अधिकारियों को सुधारने के लिए पंजाब की तरफ प्रस्थान किया। पंजाब के प्रमुख सिक्खों के नाम हुकमनामे जारी किये गए, जिनमें बाबा ं बंदा सिंघ बहादुर की सहायता करने और देश में से ज़ालिमों का राज ख़त्म करने का वर्णन था। जब एक हुकमनामा तलवंडी साबो पहुँचा तो बाबा दीप सिंघ जी अपने जत्थे को लेकर बाबा बंदा सिंघ बहादुर की फौज के साथ मिल गए। उन्होंने दमदमा साहिब की सेवा-संभाल के लिए भाई नत्था सिंघ को नियुक्त किया था। उन्होंने बाबा बंदा सिंघ बहादुर की फौज के साथ मिल कर सरहिन्द, साढौरा, समाणा, छत, बनूड़ और सहारनपुर की लड़ाई में आगे बढ़ कर भाग लिया। अपनी कुर्बानी के जज़्बे और लड़ाई के मैदान में शहादत पाने की लालसा के कारण इनका जत्था 'शहीदों का जत्था' के नाम से प्रसिद्ध हो गया। एक आधुनिका इतिहासकार लिखता है कि They Were always in the vanguard in all the battles fought by them. That is why his comrades were given the name of 'Shaheedan Da Jatha', इसी नाम पर ही आगे चल कर इस मिसल का नाम 'शहीदों की मिसल' कर प्रसिद्ध हुआ।

जब तत्त खालसा और बंदई सिक्खों में कुछ मतभेद उत्पन्न हो गए तो बाबा दीप सिंघ जी अपने जत्थे सहित वापस तलवंडी साबो लौट आए। गुरदास नंगल की गढ़ी को घेरा डालकर और मुगलों द्वारा गिरफ्तार करने के बाद बाबा बंदा सिंघ बहादुर तथा उनके ७४० साथियों को दिल्ली ले जाकर १७१६ ई. में शहीद कर दिया गया।

वापस दमदमा साहिब : दमदमा साहिब वापस लौट आने के बाद बाबा दीप सिंघ जी एक बार फिर गुरबाणी के प्रचार जैसे महान कार्य में जुट गए। आने वाले दस वर्षों (१७१६-१७२६) में उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ की चार प्रतिलिपियां तैयार कर चारों तख़्तों (श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री पटना साहिब, श्री केसगढ़ साहिब, श्री हजूर साहिब,) पर भिजवा दीं। बाबा दीप सिंघ जी द्वारा तैयार की गई इन प्रतिलिपियों के बारे में निश्चय के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता कि अब ये बीड़ें कहाँ हैं। ये चारों प्रतिलिपियां उसी बीड़ से तैयार की गई थीं, जिसे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के आदेशानसार प्रसिद्ध विद्वान भाई मनी सिंघ जी ने तैयार किया था। इस बीड़ को तैयार करने में भाई मनी सिंघ जी के साथ बाबा दीप सिंघ जी ने भी बहुत बड़ा योगदान दिया था। बाबा जी ने गुरबाणी के अनेक हस्तलिखित गुटके संगत में वितरित किए थे।

जहाँ बाबा दीप सिंघ जी पूणर्त: गुरमति और गुरबाणी के प्रचार में लगे हुए थे, वहीं आप सामाजिक तौर पर भी लोगों में अति लोकप्रिय थे। उस क्षेत्र में पानी की कमी होने के कारण लोग बड़े परेशान रहते थे। पानी की कमी को

देखते हुए बाबा जी ने एक कुआँ खुदवाया, जो अभी भी उनकी याद के रूप में विद्यमान है। बाबा दीप सिंघ जी के एक अन्य साथी भाई बुड्ढा सिंघ ने बेरी का वृक्ष लगवाया जिसका फल बड़ा मीठा और छाया बहुत घनी थी। भाई बुड्ढा सिंघ भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हजूरी सिंघों में से थे जो बाबा दीप सिंघ जी के साथ ही दमदमा साहिब आ टिके थे। दमदमा साहिब में गुरुद्वारा स्थापित करने का कार्य भी बाबा दीप सिंघ जी ने ही किया था।

बाबा दीप सिंघ जी किसी भी कौमी संकट के समय पंथ की सेवा करने के लिए सदा तत्पर रहते थे। जब १७३२ ई. में पटियाला के स. आला सिंघ को जलंधर के फ़ौजदार, मलेरकोटला के नवाब और भट्टी राजपूतों ने मिल कर घेर लिया तो वे अपने सैनिक दस्ते के साथ उसकी मदद के लिए पहुँच गए। मुग़ल और भट्टी राजपूतों की सामूहिक फौज को पराजित कर आप दमदमा साहिब वापस लौट आए।

बुड्ढा दल के जत्थेदार : १७४८ ई. में जब नवाब कपूर सिंघ ने दल खालसा की स्थापना की तो वे इस दल में शामिल हो गए। दल खालसा दो हिस्सों में बँट गया। एक हिस्सा वरिष्ठ आयु के सिंघों का था, जिसे 'बुड्ढा दल' नाम दिया गया और दूसरा हिस्सा युवा सिंघों का था, जिसे 'तरुणा दल' कहा गया। आगे चल कर जब इन दो दलों को पाँच जत्थों में बाँटा गया तो वरिष्ठ आयु के जत्थे की जत्थेदारी बाबा दीप सिंघ जी को सौंपी गई। अब तक वे अपने पंथक कार्यों और सैनिक शूरवीरता के कारण पूरे पंथ में एक आदरणीय हस्ती के रूप में लोकप्रिय हो गए थे।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के पश्चात् सिक्खों को अपने अलग और अनूठे वजूद को कायम रखने के लिए असंख्य कुर्बानियां करनी पड़ी थीं। भाई मनी सिंघ जी के बंद-बंद काटे गए, भाई तारू सिंघ जी की खोपड़ी उतारी गई, भाई सुबेग सिंघ जी और भाई शाहबाज सिंघ जी को चरखड़ी पर चढ़ा कर शहीद किया गया तथा कई मासूम बच्चों के टुकड़े-टुकड़े कर, उनकी माला बना कर उनकी माताओं के गले में पहनाई गईं। खालसा कभी भी इन यातनाओं के आगे झुका नहीं, बल्कि सदा चढ़दी कला में रह कर फलता-फूलता रहा। जब १७३८-३९ ई. में नादिर शाह और १७४८ ई. के बाद अहमद शाह अब्दाली ने पंजाब तथा हिंदुस्तान पर हमले करने शुरू किये तो पंजाब की यह शूरवीर कौम देशवासियों के सामने ढाल बन कर खड़ी हो गई। सिक्खों ने कमज़ोर हो रही मुग़ल हुकूमत और दुर्रानी हमलों का लाभ उठा कर पंजाब में अपनी राजसी शक्ति को बढ़ाना शुरू कर दिया। ज्ञानी गिआन सिंघ के कथनानुसार नवाब अदीना बेग की मृत्यु के बाद जब सिक्खों ने इलाका जलंधर-दोआबा पर कब्ज़ा किया तो बाबा दीप सिंघ जी अपने जत्थे के साथ दरिया ब्यास एवं

रावी पार कर सियालकोट पर टूट पड़े। यहां के हाकिम मुहम्मद अमीन को पराजित कर यह इलाका स. दिआल सिंघ तथा स. नत्था सिंघ को सौंप दिया। जब इनके जानशीन स. करम सिंघ और स. गुलाब सिंघ ने पंथक हितों को नज़रअंदाज़ करना शुरू किया तो बाबा दीप सिंघ जी ने उनसे ये इलाके छीन कर गुरुद्वारा बाबे दी बेर के लंगर-पानी के लिए बतौर जागीर नाम लगा दिये। यह उस गुरुद्वारा साहिब के नाम सबसे पहली जागीर थी, जो शहीदों की मिसल की तरफ से लगाई गई। जैसे कि पहले वर्णन हो चुका है, इसके पश्चात् बाबा दीप सिंघ जी करतारपुर (जलंधर) चले गए, जहाँ उन्होंने दमदमी बीड़ का करतारपुरी बीड़ के साथ मिलान कर बड़ा महान काम किया। अपने करतारपुर निवास के दौरान आप भोजन स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया के लंगर में से परशादा छका करते थे। यहीं पर उन्होंने स. जस्सा सिंघ के साथ मिल कर पंथ की बेहतरी कला के लिए अनेक कार्यक्रम बनाए थे।

बेशक बाबा दीप सिंघ जी की आयु बड़ी हो रही थी, परन्तु वे फिर भी पूरी ताकत के साथ गुरु-पंथ की सेवा में लगे रहते थे। देश में अहमद शाह अब्दाली के हमले जारी थे। अपने एक हमले के दौरान जब वह दिल्ली को लूट कर और रास्ते में से अनेक नि:सहाय स्त्रियों को बंदी बना कर काबुल वापस लौट रहा था तो बाबा दीप सिंघ जी ने थानेसर के निकट उसके पिछले दस्ते पर हमला बोल कर बंदी स्त्रियों को छुड़वा लिया। बाद में उन नि:सहाय स्त्रियों को सम्मान सहित उनके घर भेज दिया गया।

बार-बार अपने फ़ौजी दस्तों पर सिक्खों द्वारा किए जा रहे आक्रमण के कारण अहमद शाह अब्दाली बहुत परेशान था। वो इस उभर रही जत्थेबंदी को जड़ से ख़त्म कर देना चाहता था, ताकि उसकी पंजाब और हिंदुस्तान पर पकड़ मज़बूत हो सके। जब उसने हिंदुस्तान पर अपना चौथा हमला किया तो उसने पंजाब को अपने साम्राज्य में मिला कर अपने पुत्र तैमूर शाह को यहाँ का सूबेदार नियुक्त कर दिया। उसने अपने एक तजुर्बेकार और प्रमुख जरनैल जहान खान को उसका सहायक नियुक्त किया, ताकि वह सिक्खों के विरुद्ध सख़्त कार्यवाही कर उनको हमेशा-हमेशा के लिए कुचल दे।

जहान खान का श्री अमृतसर साहिब पर हमला : अपने कई हमलों के दौरान दुर्रानी हमलावरों को यह पता चल चुका था कि सिक्खों की असली शक्ति का स्रोत श्री हरिमंदर साहिब और अमृत सरोवर है, जहाँ स्नान कर ये लोग मृत्यु के भय से मुक्त हो जाते हैं, इसी कारण उन्होंने सिक्खों को दबाने के लिए श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर साहिब को अपना निशाना बनाया। १७५७ ई. में जहान खान ने श्री अमृतसर साहिब पर हमला बोल कर राम रौणी का किला गिरा दिया और श्री दरबार साहिब की बेअदबी कर अमृत सरोवर को पाट दिया। गुरु

की नगरी के इर्द-गिर्द सख़्त पहरे लगा दिए गए, ताकि कोई भी सिक्ख श्री अमृतसर साहिब की सीमा में दाख़िल न हो सके।

दमदमा साहिब से बाबा दीप सिंघ जी का प्रस्थान : जब इन बातों की ख़बर श्री दमदमा साहिब में बाबा दीप सिंघ जी के पास पहुँची तो उनका सिक्खी जोश खौलने लगा। इस समय बाबा दीप सिंघ जी की आयु ७५ वर्ष से ऊपर हो चुकी थी। उन्होंने दमदमा साहिब की सेवा-संभाल की ज़िम्मेदारी भाई सदा सिंघ को सौंप कर श्री अमृतसर साहिब की तरफ जाने का फ़ैसला कर लिया। वे गुरुधामों की पवित्रता बहाल करने और दुर्रानी फौज के साथ दो-दो हाथ कर उन्हें एहसास दिलाना चाहते थे कि सिक्ख चाहे कोई और बात बरदाश्त कर जाये, मगर वे अपने गुरुधामों का अपमान कभी सहन नहीं कर सकते। अपने मन में इस बात का निश्चय कर आप गाँव जग्गा, बामुण, नेरियां वाला, बिंझोके, गुरू चउंतरा, फूल, मराज, दराज़, भुच्चो, गोबिंद कोट और लक्खी जंगल में से चुनिंदा सिक्खों को इकट्ठा कर श्री अमृतसर साहिब के लिए चल पड़े।

जब बाबा दीप सिंघ जी श्री दमदमा साहिब से चले तो उनके साथ केवल ५०० सिंघ थे, परन्तु वे जैसे-जैसे श्री अमृतसर की तरफ बढ़ रहे थे, उनमें माझा, मालवा और दोआबा क्षेत्र के सिंघ आकर मिलते जा रहे थे। तरनतारन तक पहुँचते-पहुंचते उनके जत्थे की संख्या पांच हज़ार तक पहुँच गई। तरनतारन से कुछ मील की दूरी पर दुर्रानी फौज बाबा जी का रास्ता रोकने के लिए तैयार खड़ी थी। बाबा जी जानते थे कि इस लड़ाई में किसी का बच पाना संभव नहीं होगा, इसलिए उन्होंने तरनतारन से कूच करने से पहले अपने दोधारे खंडे के साथ धरती पर एक रेखा खींची तथा साथ आए सिंघों को ललकार कर कहा, ''खालसा जी! अब श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब को आज़ाद कराने एवं शहादत देने का समय आ गया है, इसलिए इस रेखा को पार कर वही शूरवीर आगे आए जो अपना शीश गुरुधाम की पवित्रता के लिए अर्पण करना चाहता है। जिसे अपनी ज़िंदगी प्यारी हो वह यहाँ से ही अपने घर को वापस लौट जाए!'' यह कह कर बाबा जी ने जयकारा गजाया और देखते ही देखते बाबा जी का सारा जत्था रेखा पार कर उनके साथ श्री अमृतसर साहिब के लिए चल पड़ा। सबके चेहरों पर शहादत देने का उत्साह और जुबान से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी गूँजती सुनाई दे रही थी :

जब आव की अउध निधान बनै
अत ही रन मै तब जूझ मरों ।। २३१ ।।

शहादत : हाथों में शमशेर लिए और सति श्री अकाल के जयकारे गजाते हुए बाबा दीप सिंघ जी का शहीदी जत्था गांव गोहलवड़ पहुँच गया। अहमद शाह अब्दाली का जरनैल जहान खान पहले से ही अपने भारी दल के

साथ तैयार खड़ा था। बाबा दीप सिंघ जी के वहाँ पहुँचते ही दोनों दलों के बीच घमासान जंग शुरू हो गई। दोनों तरफ से तीर, तलवार, नेजे और खंडे खड़कने शुरू हो गए। युद्ध की उमंग लिए योद्धा रक्त-रंजित होकर धरती पर गिरने शुरू हो गए। धार्मिक जज़्बे में रंगे और गुरु-दरबार में अरदास कर आए सिंघ दुर्रानी फौज पर टूट पड़े। बाबा दीप सिंघ जी, बाबा नत्था सिंघ जी और उनके अन्य साथियों का जोश देखने लायक था। बाबा दीप सिंघ जी ने दुधारे खंडे के साथ कई दुर्रानियों के सिर उतार कर उनकी फौज में हलचल पैदा कर दी। बाबा जी के साथी बाबा नत्था सिंघ के अलावा जिन प्रमुख जत्थेदारों ने इस लड़ाई में भाग लिया उनकी संख्या नौ अथवा दस बतायी गई है। बाबा सुधा सिंघ, बाबा सूर सिंघ, बाबा हरी सिंघ, बाबा कौर सिंघ, बाबा दयाल सिंघ, बाबा बसंत सिंघ, बाबा वीर सिंघ, बाबा बलवंत सिंघ और बाबा रण सिंघ बड़ी बहादुरी के साथ लड़े तथा दुर्रानी सैनिक लड़ाई के मैदान छोड़ भागना शुरू हो गए।

दुर्रानियों को यह उम्मीद नहीं थी कि सिक्ख योद्धा इतनी बहादुरी के साथ लड़ेंगे। अनेक लड़ाइयों का विजेता जहान खान मैदान छोड़ कर भाग जाने का विचार ही बना रहा था कि हाजी अतायी लाहौर से और पट्टी का हाकिम कासिम खान अपनी ताज़ादम फौज लेकर उसकी मदद के लिए पहुँच गए। नई आई फ़ौज के पहुँचने से दुर्रानियों के हौसले फिर बुलंद हो गए। लड़ाई जारी थी और सिंघ श्री अमृतसर साहिब की तरफ बढ़ने की कोशिश कर रहे थे। गोहलवड़ और श्री रामसर साहिब के निकट हुई लड़ाई में अनेक सिंघ शहीद हो चुके थे। इनमें स. सज्जन सिंघ, स. बहादर सिंघ, स. अग्घड़ सिंघ, स. संत सिंघ, स. हीरा सिंघ और स. निहाल सिंघ शामिल थे, जबकि दुर्रानी फौज में से शाह जमाल, याकूब खान, मीर नियामत उल्ला आदि जरनैल मारे गए थे।

दुर्रानी फौज बाबा दीप सिंघ जी को अपना निशाना बना कर चारों तरफ से उन पर वार कर रही थीं। वे तीर और तलवारों के वार से गंभीर रूप से घायल हो चुके थे। सबसे घातक चोट गर्दन पर थीं। आप लड़ाई के मैदान में ही शहीद होने वाले थे कि भाई धरम सिंघ नामक एक सिंघ ने बाबा जी को याद दिलाया कि ''आपने तो श्री दरबार साहिब को दुर्रानियों से आज़ाद करवाने और वहाँ पहुँचने का प्रण किया था। आपका यह प्रण कैसे पूरा होगा?''-- ''तुम तों कहा सुधा सर जाऊँ, अपना तन जा उथे लाऊँ।'' सिक्ख इतिहास में यह रिवायत जबरदस्त प्रचलित है कि यह सुनते ही बाबा दीप सिंघ जी अपने कटे हुए शीश को बायें हाथ की हथेली पर रख कर दायें हाथ से खंडा घुमाते हुए, दुर्रानी सैनिकों को मारते हुए और अपना रास्ता बनाते हुए अमृत सरोवर की परिक्रमा की दक्षिणी दिशा में उस जगह पर पहुँच गए जहाँ

अब उनका शहादत स्थान गुरुद्वारा बाबा दीप सिंघ जी बना हुआ है। इसी जगह पर आप गुरु-चरणों में समर्पित हुए थे। श्री दरबार साहिब के दर्शन को आया प्रत्येक गुरसिक्ख, इस स्थान के पास से गुज़रते समय उस चबूतरे पर माथा टेक कर जाता है, जहाँ बाबा जी का शीश गिरा था। जिस स्थान पर बाबा जी का दाह-संस्कार किया गया था वहाँ अब गुरुद्वारा शहीदगंज बाबा दीप सिंघ जी सुशोभित है। यह स्थान चाटीविंड दरवाजे के निकट 'गुरुद्वारा शहीदां' के नाम से भी जाना जाता है। प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु यहाँ आते हैं और उस महान शहीद को याद करते हैं, जिसने गुरुद्वारों की पवित्रता और आज़ादी के लिए अपना आप कुर्बान कर दिया था।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बहुपक्षीय शख्सियत के प्रभाव में ढले यह महान योद्धा भाई मनी सिंघ जी और भाई गुरदास जी की भांति अपने समय के उच्च कोटि के विद्वान भी थे वह सिक्खी प्रचार के अथक प्रचारक और सिक्खी आचरण की अद्वितीय मिसाल था। गुरबाणी के प्रचार और बाणी के अर्थ-ज्ञान के कारण दमदमा साहिब सिक्ख साहित्य एवं धार्मिक गतिविधियों का महान केंद्र बन गया। बाबा दीप सिंघ जी की शख्सियत का ऐसा प्रभाव भी था कि उनके जत्थे से अमृत-पान करना बड़े फ़ख्र की बात समझी जाती थी। तरुणा दल और बुड्ढा दल के जत्थेदार अक्सर उनकी सलाह लेकर काम किया करते थे।

आप उन खुशकिस्मत सिंघों में से थे जिन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हाथों अमृत छका और उनका समय देखा था। आप जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर की फौज के साथ मिल कर सिक्ख राज की स्थापि के लिए किये गए प्रारंभिक दौर के यत्नों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था। आपने सिक्खी स्वरूप के अलग और अनूठे अस्तित्व को कायम रखने के लिए सिक्खों को बंद-बंद कटवाते, चरखड़ियों पर चढ़ते और खोपड़ियाँ उतरवाते देखा था। फिर उन्होंने सिक्खों को मुगलों एवं दुर्रानियों के विरुद्ध देश की आज़ादी के लिए ढाल बन कर खड़े भी देखा था। आप पंजाब में घटने वाली इन घटनाओं के मूकदर्शक नहीं, बल्कि गतिशील मार्गदर्शक एवं बहादुर योद्धा के तौर पर ऐसे प्रमुख पात्र थे, जिन्होंने कठिन समय में सिक्ख पंथ का नेतृत्व किया। आपने अपने पीछे आत्म-सम्मान, आज़ादी और शहादत की ऐसी विरासत छोड़ी है कि सिक्ख कौम उनसे प्रेरित होकर प्रत्येक सदी में उनके पद-चिन्हों पर चलने व आगे बढ़ने का यत्न करती रही है। आप जी का जीवन, किरदार और शहादत ऐसे स्रोत हैं, जहाँ से प्रेरणा लेकर कौम गौरव महसूस करती है।

सचखंड श्री हरिमंदर साहिब

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'*

श्री अमृतसर साहिब में सुस्थित और पवित्र सरोवर के बीच सुशोभित है श्री हरिमंदर साहिब। 'हरिमंदर' शब्द की व्युत्पत्ति दो शब्दों के योग से हुई है-- 'हरि' एवं 'मंदिर'। 'हरि' का अर्थ-- ईश्वर प्रभु आदि है और 'मंदिर' का अर्थ-- पवित्र भवन, पवित्र स्थान है। श्री हरिमंदर साहिब निराकार प्रभु, निरंकार की स्तुति का पावन स्थान है। यहां पर शबद-गुरु का निवास, गुरबाणी का पाठ होता है, गुरबाणी-कीर्तन, प्रभु की कीर्ति का गायन होता है।

श्री हरिमंदर साहिब सदा से संसार भर के सिक्ख तथा अन्य सभी मज़हबों से संबंधित श्रद्धालुओं की श्रद्धा व आस्था का केंद्र रहा है और हमेशा रहेगा। इसकी ऐतिहासिकता, धार्मिकता, उच्चता, पवित्रता, मान्यता, प्रसिद्धि और अहमियत को शब्दों में वर्णन कर पाना मुश्किल है। यह स्थान वाहिगुरु का साक्षात दर्शन स्थान है।

सन् १५६६ ई. में श्री गोइंदवाल साहिब में बादशाह अकबर तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी के दरबार में उनके दर्शन-दीदार हेतु आया और बीबी भानी जी के नाम झबाल के परगने कर गया। श्री गुरु अमरदास जी ने १५७० ई. में श्री गुरु रामदास जी को एक नया नगर 'गुरु का चक्क, रामदासपुर, श्री अमृतसर साहिब बसाने का आदेश दिया। १८८३-८४ ई. के गज़टियर में यह लिखा गया था कि जिस स्थान पर 'गुरु का चक्क' (श्री अमृतसर साहिब) निर्मित हुआ, वह जगह श्री गुरु रामदास जी ने 'तुंग' नामक गांव के जमीदारों से ७०० अकबरी रुपए में खरीदी थी। सन् १७९७ तक 'गुरु का चक्क' नाम प्रसिद्ध रहा है। ब्राऊन के बनाए गए मानचित्र में दोनों नाम 'अमृतसर' तथा 'गुरु का चक्क' मिलते हैं।

श्री गुरु रामदास जी ने सर्वप्रथम 'संतोखसर' नामक सरोवर की खुदाई आरंभ की। तत्पश्चात्त 'गुरु का चक्क' नामक नगर बसाने का शुभांरभ किया और 'अमृत सरोवर' की खुदाई करवाई।

श्री अमृतसर साहिब का निर्माण-कार्य श्री गुरु अरजन देव जी के समय तेज गति पकड़ने लगा था। इतिहासकार गोपी चंद नारंग लिखता है- ''श्री गुरु अरजन देव जी ने यह बात समझ ली थी कि श्री अमृतसर साहिब को 'महानगर' में बदल देना सिक्खी के विकास के लिए अति आवश्यक है।'' श्री गुरु रामदास जी नाना प्रकार के व्यवसाय करने वाले (बावन) कारीगरों को आवश्यक सुविधाएं प्रदान कर यहां बस गए थे।

श्री गुरु अरजन देव जी ने १ सितंबर, १५८१

*बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन : ९८७२२-५४९९०

ई. को गुरुआई पर विराजमान होने के बाद श्री अमृतसर साहिब में रहकर पवित्र सरोवर को पक्का करने की सेवा तेज़ कर दी, तथा शहर की तामीर का काम भी तेज़ कर दिया। साथ-साथ गुरु जी गुरबाणी के प्रचार की ओर भी विशेष ध्यान देते थे। सिक्खों में सेवा का उत्साह जगाने व बढ़ाने हेतु गुरु जी ने हुकमनामे लिखकर भेजे। उनके बड़े भाई प्रिथी चंद ने उनके सेवा-कार्यों में अवरोध खड़ा किया, किंतु भाई गुरदास जी, बाबा बुड्ढा जी तथा अन्य सिक्ख श्रद्धालुओं ने उसकी हर चाल नाकाम कर दी।

सच्चे व उच्च आदर्शों वाले सिक्ख धर्म की नींव हमेशा के लिए और सुदृढ़ करने हेतु श्री गुरु अरजन देव जी ने सन् १५८८ ई. में माघी वाले दिन श्री हरिमंदर साहिब की आधारशिला साँई मियां मीर जी के हाथों रखवाई। वे उस समय के प्रसिद्ध फकीर थे। गुरु-घर के साथ उनका आत्मिक संबंध था।

इस प्रकार श्री गुरु नानक देव जी के समय से चले आ रहे सिक्ख धर्म का एक बड़ा व महत्त्वपूर्ण केंद्र स्थापित हो गया और सर्वश्रेष्ठ आदर्श, संसार के समक्ष प्रकट हो गया। श्री हरिमंदर साहिब का निर्मित होना सद्भावना, प्रेम, भाईचारे का प्रतीक बन चुका है। श्री हरिमंदर साहिब के बनने से सिक्ख धर्म का केंद्र मज़बूत हो गया एवं पांचवे पातशाह की कीर्ति चारों ओर फैल गई।

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री हरिमंदर साहिब के चार द्वार (दरवाजे) रखे, ताकि पूर्व-पश्चिम आदि का धार्मिक विवाद ही खत्म हो जाए। गुरु जी का ज्यादातर समय श्री हरिमंदर साहिब बनाने की ओर लग रहा था। गुरु जी जहां हर प्रकार के धार्मिक, आध्यात्मिक और आत्मिक ज्ञान में परिपूर्ण थे, वहीं वे गणित, देवनागरी, संस्कृत, चित्रकारी विद्या में भी निपुण थे। गुरु जी तामीर व शिल्प-कला में भी पारंगत थे। श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण के दौरान वे स्वयं ईंटे लगाते थे अर्थात् चिनाई का काम करते थे। बाबा बुड्ढा जी अपने सिर पर ईंटें, गारा आदि रखकर ढोते थे। बहुत-से सिक्ख श्रद्धालु भी कारसेवा में लगे हुए थे। साथ-साथ 'सतिनामु वाहिगुरु' की पवित्र ध्वनि वातावरण में दिव्स रस घोल रही थी।

श्री हरिमंदर साहिब की बनी हुई अति सुंदर, मनमोहक इमारत को देखकर कहा जा सकता है कि इसे बहुत मेहनत, लगन, श्रद्धा व समर्पण से बनाया गया है। बहुत खूबसुरत, मुकद्दस शानदार स्थान है यह। श्री हरिमंदर साहिब की महिमा अपरंपार, महान एवं स्तुतीय है। यह सद्भावना, भाईचारे, आपसी प्रेम-प्यार, रूहानियत, दिव्य ज्ञान के प्रकाश का घर है। रूह को सच्ची प्रसन्नता, सच्ची शांति, असीम बख्शिशें प्रदान करने का घर है। संताप, भय, दुख, उदासी हरने का घर है श्री हरिमंदर साहिब। यहां पहुंच कर हृदय में नम्रता, आनंद, संतोष, कृतज्ञता (शुक्राना) के भाव प्रवेश करते हैं। श्री हरिमंदर साहिब जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टि प्रदान करता है। परमपिता परमात्मा के अनमोल प्यार

की बख्शिश है श्री हरिमंदर साहिब। यह जीवन-दान की निशानी है।''

पवित्र सरोवर के बीचो-बीच श्री हरिमंदर साहिब विद्यमान है। इसे देखकर मन में दिव्यता के भाव पैदा होते हैं। पवित्र सरोवर के पवित्र जल की लहरें मन में पवित्र तरंगें उत्पन्न करती हैं। दुनिया की भागदौड़, लोभ-लालच, ईर्ष्या, द्वेष, तृष्णा, मन की दुविधा आदि के भाव खत्म हो जाते हैं।

श्रद्धालुओं की श्रद्धा बयान करती है कि अमृत सरोवर में स्नान करने से उन्हें अपने कर्मों को शुद्ध करने की शक्ति प्राप्त करने में मदद मिलती है। रोगों से छुटकारा मिलता है। वे इसके पवित्र जल को अपने घर भी ले जाते हैं।

श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब परिसर में अन्य तीर्थ-स्थल भी हैं। श्री हरिमंदर साहिब के बिलकुल सामने श्री अकाल तख्त साहिब सुशोभित है। इसके पास ही श्री गुरु तेग बहादर साहिब की याद में गुरुद्वारा थड़ा साहिब सुस्थित है। गुरुद्वारा बाबा अटल राय जी, शहीद बाबा दीप सिंघ जी का शहीदी-स्थल और गुरुद्वारा बीबी कौलां जी है। कुछ दूरी पर स्थित गुरुद्वारा गुरु का महल नामक स्थान है। गुरुद्वारा बाबा अटल राय जी नौ-मंजिला इमारत है। यह श्री अमृतसर साहिब की सबसे ऊँची इमारत है। परिक्रमा में तीन ऐतिहासिक बेरियां-- दुख भंजनी बेरी, बेर बाबा बुड्ढा साहिब तथा लाची बेर विद्यमान हैं। बुंगा रामगढ़िया भी यहीं पर है।

श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण संपूर्ण होने के बाद श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा संपादित श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रथम प्रकाश सन् १६०४ ई. में इस पवित्र स्थान पर किया गया था।

१८वीं-१९वीं शताब्दी में मुगल व अफगान हमलावरों ने इसे कई बार क्षति पहुंचाई। सिक्खों ने बार-बार इसे बनाया।

अहमद शाह अब्दाली द्वारा नियुक्त लाहौर के गवर्नर जहान खान ने श्री अमृतसर साहिब को अपना मुख्य केंद्र बना लिया और सिक्खों के जज़्बात कुचलने हेतु श्री हरिमंदर साहिब की इमारत को ढहा दिया तथा पवित्र अमृत सरोवर को मिट्टी डालकर पाट दिया। इस अपमान का बदला लेने हेतु बाबा दीप सिंघ जी ने अपने दल-बल के साथ जहान खान की सेना का सामना किया। बाबा दयाल सिंघ ने संघर्ष के दौरान जहान खान को मौत के घाट उतार दिया। स्वयं बाबा दीप सिंघ जी ने उसके एक सेनापति जमाल शाह के साथ दो-दो हाथ करते हुए उसे सदा की नींद सुला दिया। बाबा दीप सिंघ जी गंभीर रूप से घायल हो गए । शीश हथेली पर रख कर लड़ते हुए वे श्री दरबार साहिब की परिक्रमा में पहुंच गए तथा शहादत प्राप्त कर गए। इसी प्रकार भाई सुक्खा सिंघ भाई महिताब सिंघ ने श्री हरिमंदर साहिब का घोर अपमान करने वाले मस्सा रंघड़ का सिर धड़ से अलग कर दिया। महाराजा रणजीत सिंघ ने इसके पुनर्निमाण के बाद इस पर सोने की सेवा करवाई। जून सन् १९८४ में यहां पर हुए साका नीला तारा (घल्लूघारा, जून १९८४) को हम कभी नहीं भुला सकते।

जापु साहिब की बाणी : एक विस्मयकारी आत्मिक यात्रा

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

अध्यात्म का गूढ़ संसार जीव के लिये सदा ही अबूझ रहा है। इसकी गहराई, ऊंचाई और विशालता गणना से परे का विषय रही है। परमात्मा का निर्गुण अथवा सगुण दोनों ही रूप विस्मय उत्पन्न करने वाले हैं। श्री गुरु नानक साहिब ने परमात्मा के निराकार स्वरूप को सर्वव्यापकता में प्रकट कर उसके निकट होने का एहसास कराया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने परमात्मा के निराकार स्वरूप को गुणों में प्रकट कर सगुण स्वरूप प्रदान करने का महान उपकार किया, जो सभी संशयों का निराकरण करने वाला सिद्ध हुआ। गुरु साहिब की बाणी 'जापु साहिब' रहस्यमयी आध्यात्मिक जगत का आनन्ददायक अनुभव है, जो मन को संतृप्त कर देता है। जापु साहिब की बाणी में संस्कृत और फारसी के शब्दों की प्रचुरता है, जिससे इसे क्लिष्ट माना जाता है, किन्तु जब इस पावन बाणी का पाठ एकाग्रता से आरंभ करें तो मन इसमें शीघ्र ही रम जाता है। इस बाणी का प्रवाह अद्‌भुत है, जो चेतना को उस लोक में ले जाता है जहां आनंद की ऋतु अपने उत्कर्ष पर होती है, क्लिष्टता आलोप हो जाती है, बस, सरसता बचती है, मन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रति अगाध श्रद्धा से भर जाता है जापु साहिब की बाणी उन बाणियों में सम्मिलित है जिसका पाठ अमृत तैयार करते वक्त किया जाता है। सिक्ख की नितनेम की पांच बाणियों में शामिल जापु साहिब बाणी छंदबद्ध है। इसमें कुल १९९ छंद हैं।

प्रसिद्ध सिक्ख विद्वान प्रोफेसर साहिब सिंघ के अनुसार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सन् १६८४ में नाहन गये थे और सन् १६८५ में पाउंटा साहिब नगर बसाया था। यहां गुरु साहिब ने सन् १६८७ तक निवास किया और दरबार लगाया था। यहीं गुरु साहिब के दरबार में देश के कोने-कोने से आये प्रमुख कवियों ने श्रेष्ठ रचनायें रची थीं। गुरु साहिब स्वयं भी उत्कृष्ट कवि थे और अपनी रचनायें दरबार में सुनाया करते थे। प्रोफेसर साहिब सिंघ का अनुमान है कि इसी समय के अंतराल में गुरु साहिब ने यमुना नदी के किनारे एकांत में बैठ कर जापु साहिब, सवैये और अकाल उसतत जैसी बाणियां उच्चारण की थीं।

जापु साहिब की बाणी परमात्मा से परिचय की बाणी है। परमात्मा के सगुण रूप का वर्णन भी कठिन है, किन्तु निर्गुण स्वरूप को शब्दबद्ध करना तो असंभव-सा है। जापु साहिब में गुरु साहिब ने स्पष्ट कर दिया कि परमात्मा का कोई रूप, रंग, आकार, वेश नहीं है। परमात्मा का

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९

कोई प्रतीक भी नहीं बताया जा सकता । वह एक अपार तेजोमय और स्थायी सत्ता है, जिसे वर्णित नहीं किया जा सकता। सभी अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार उसे जान रहे हैं। इसमें श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की अतिशय विनम्रता के दर्शन भी होते हैं।

सदैव विशिष्ट वर्ग परमात्मा पर अपना अधिकार जताने का यत्न करते रहे थे और परमात्मा तथा आम मनुष्य के मध्य माध्यम के रूप में खड़े दिखने का प्रयास करते थे। इससे भावनाओं का भरपूर शोषण और कर्मकांडों का बोलबाला हो रहा था। गुरु साहिब ने इस स्थिति का प्रबल खंडन किया।

अलेख हैं ।।अभेख हैं ।।
अनाम हैं ।।अकाम हैं ।।३०।।

परमात्मा को किसी लेख, वेश, स्वरूप, कर्म में सीमित नहीं किया जा सकता । वह तो समान रूप से सभी का उद्धारक है। गुरु साहिब ने उसे अमीक और रफीक कहा है। वह सभी का संगी, सहायक है और घट-घट में व्याप्त होते हुए भी अंततः एक ही सत्ता है-- *''अनेक हैं ।। फिरि एक हैं।।''* यह विचार श्री गुरु नानक साहिब की बाणी *''सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ।।''* की ही पुष्टि थी। परमात्मा का स्वरूप अगम्य है, वर्णन से परे है, किन्तु वह वंदनीय है। मनुष्य परमात्मा को उसकी कृपा, गुणों में जैसा भी देख पा रहा है या नहीं देख पा रहा है, उसके समक्ष नत्मस्तक हो :

नमो सरब रूपे ।। नमो सरब भूपे ।।१९।।
नमो सरब खापे ।। नमो सरब थापे ।।

परमात्मा की भक्ति के लिये इससे अधिक प्रेरणादाई और सच की स्वीकार्यता का संदेश कोई नहीं हो सकता। परमात्मा से जुड़ने और उसकी कृपा प्राप्त करने का एक ही मार्ग है-- अपनी बुद्धि और चतुरता को त्याग कर उसके समक्ष पूर्ण समर्पण व उसके प्रति प्रेम, श्रद्धा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस श्रद्धा और समर्पण का ठोस आधार भी बताया, ताकि मनुष्य के मन में कोई शंका न रहे और वह अपने हित के प्रति अचिंत हो जाये।

सरबं दाता ।।सरबं गिआता ।।
सरबं भाने ।।सरबं माने ।।६।।

परमात्मा बिना किसी भेदभाव के सभी का पालन-पोषण कर रहा है और सभी का ध्यान रख रहा है। वह सभी की विधि और गति का ज्ञान रखता है। सभी उसकी आज्ञा में हैं और उसकी आज्ञा के पालन में ही सभी का हित निहित है। परमात्मा से निरपेक्ष नहीं रहा जा सकता है।

संसार में अनेकानेक धर्म हैं। सभी धर्मों में परमात्मा के प्रति अपने विचार हैं, अपने प्रतीक और नामकरण हैं, इससे सदैव वाद- विवाद और भ्रम बने रहते हैं। धर्म का वास्तविक स्वरूप उपेक्षित होता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इससे भली-भांति विदित थे। उन्होंने 'त्व प्रसादि सवैये' बाणी में इसका विशेष उल्लेख भी किया और ऐसे विवादों को निरर्थक बताया। जापु साहिब की बाणी में गुरु साहिब ने

परमात्मा का जो स्वरूप स्थापित किया उससे इन विवादों की संभावनायें ही समाप्त कर दीं।

जले हैं ।।थले हैं ।।
अभीत हैं ।।अभे हैं ।।६२ ।।
प्रभू हैं ।।अजू हैं ।।
अदेस हैं ।।अभेस हैं ।।६३ ।।

परमात्मा न किसी विशेष देश अथवा भू-भाग का निवासी है, न उसका कोई भिन्न वेश है। वह सर्वत्र है। वह जल में भी है, थल में भी है अर्थात् पूरे ब्रह्मांड में विद्यमान है। वह पूरे संसार का है। उसकी कोई सीमा, कोई बंधन नहीं है। वह सभी देशों अर्थात् पूरे भू-भाग में है और सभी वेशों में है, जिनकी कल्पना संसार के किसी भी कोने, किसी भी दिशा में बैठा, कोई भी मनुष्य कर सकता है। ''*नमो सरब देसे।। नमो सरब भेसे ।।*'' सभी को परमात्मा में अपनी संबद्धता के दर्शन होते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कहा कि परमात्मा तो सभी की समान रूप से चिंता कर रहा है। परमात्मा की इस वृत्ति को प्रकट करने के लिये गुरु साहिब ने करुणालय, अरि घालय, खल खंडन, महि मंडन, जगतेश्वर, परमेश्वर, कलि कारण, सरब उबारण जैसे विशेषण प्रदान कर धर्म जगत की दिशा ही बदल दी। इससे परमात्मा की एकमात्र स्थापित सत्ता के मानव समाज को दर्शन हुए। परमात्मा ही एकमात्र सृजनकर्ता, पालक और संहारक है। संसार के समस्त जीव उसके अधीन हैं-- ''*सरब पालक सरब घालक सरब को पुनि काल।।*''यह मानव एकता का बड़ा सूत्र भी बना।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने परमात्मा के विभिन्न रूपों के दर्शन कराये, सभी रूपों को नमन किया और सभी रूपों में परमात्मा के लिये प्रेम जाग्रत करना सिखाया। परमात्मा रोग में भी है, भोग में भी है, जीत में भी है, किन्तु वह प्रेम स्वरूप है :

जत्र तत्र दिसा विसा हुइ फैलिओ अनुराग।।८०।।

परमात्मा सर्वत्र विद्यमान है और सर्वत्र ही प्रेम का भाव उत्पन्न कर रहा है। उसकी कृपा पाने का भी एक ही पंथ है-- प्रेम-भक्ति। गुरु साहिब ने 'त्व प्रसादि सवैये' में भी बल देकर कहा है कि परमात्मा को प्रेम से ही पाया जा सकता है। श्री गुरु नानक साहिब ने जो प्रेम-पंथ तैयार किया था श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उसी पंथ पर चलने के लिए सिक्खों के संकल्प को दृढ़ करा रहे थे। गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा का स्वरूप ही ऐसा है।

करीमुल कमाल हैं।।
कि हुसनल जमाल हैं।।१५२।।

परमात्मा के गुण भी मन को मोहित करने वाले हैं और उसका प्रभाव, कृपा मन को प्रकाशित करने वाली है। वह सूर्यों का सूर्य, चंद्रमाओं का चंद्रमा है। वह नृत्यों में सर्वश्रेष्ठ नृत्य और नादों में सर्वोत्तम नाद है। उसमें कोई दोष नहीं है-- ''कलंकं बिना निहकलंकी सरूपे ॥'' संसार में जिसे भी सर्वोत्तम माना गया है, परमात्मा उन सभी का मानक है, आदर्श है। वह संसार की समस्त सुंदरता, कोमलता और

प्रखरता का स्रोत है। समस्त श्रेष्ठता परमात्मा से ही उत्पन्न हो रही है। इस कथन का सीधा संदेश था कि मनुष्य यदि किसी भी प्रकार का अभिमान, अहंकार करता है तो यह उसका भ्रम और मिथ्या विचार है और परमात्मा से दूर ले जाने वाला है।

जापु साहिब की बाणी मन को अमृतमयी बनाती है। सारे भ्रम, दुविधाओं, अवगुणों का नाश कर परमात्मा से जोड़ती है। इस बाणी के एक-एक छन्द की व्याख्या श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी में प्राप्त होती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पूरी बाणी कंठस्थ थी और दमदमा साहिब में उन्होंने अपनी स्मृति से ही पूर्ण श्री गुरु ग्रंथ साहिब लिपिबद्ध कराया था, इसलिये श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा उच्चरित बाणी में किसी अंतर की संभावना मूलत: निर्मूल हो जाती है।

जापु साहिब की बाणी का पाठ मन को बांधने के साथ ही एक खास ऊर्जा और उत्साह उत्पन्न करने वाला तथा रस से पूर्ण करने वाला है। डॉ. तेजिंदर गुलाटी ने अपने एक शोध-पत्र में जापु साहिब की बाणी की संगीतात्मकता पर विस्तार से चर्चा की है। जापु साहिब की बाणी संगीत के कई सुरों और स्वरों के संयोजन से रची गयी बाणी है, जो आत्मिक चेतना को उस स्तर पर ले जाती है जहां परमानंद से एकाकार की स्थिति बन जाती है। यद्यपि जापु साहिब की बाणी के आरंभ में किसी राग का उल्लेख नहीं है फिर भी इस बाणी का संगीत पक्ष अति सबल है। संगीत की दृष्टि से इस बाणी में दस प्रकार के छन्द हैं, जिन्हें इस क्रम में दिया गया है कि बाणी का रिदम अपने उत्कर्ष पर जा पहुंचा है।

साहित्यिक दृष्टि से भी जापु साहिब की बाणी का विशिष्ट स्थान है। अनेक अलंकारों के प्रयोग ने इस बाणी को हृदयग्राही बना दिया है। इसमें शृंगार रस, अद्‌भुत रस, करुण रस, रौद्र रस, वीर रस, शांत रस, वात्सल्य रस और भक्ति रस का एक साथ प्रयोग एक विलक्षण अनुभूति प्रदान करने वाला है। गुरु साहिबान की सम्पूर्ण बाणी का साहित्यिक पक्ष इतना सबल है कि बाणी की आध्यात्मिकता दोपहर के चमचमाते सूर्य की तरह प्रकट हो ज्ञानमय और प्रेरक बन गई है। डॉ. तेजिंदर गुलाटी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा किये भाषाई प्रयोगों का भी उल्लेख किया है, जैसे 'अनेक' संस्कृत का शब्द है। गुरु साहिब ने इसमें फारसी का विशेषण 'उल' जोड़ कर 'अनेकुल' बना दिया। इसी तरह 'बुलंदी' में 'उल' जोड़ कर 'बिलंदुल' बनाया। सारांश रूप में डॉ. गुलाटी ने लिखा है कि जापु साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की संगीतबद्ध समृद्ध भाषाओं में रची गई दैवीय काव्य की सर्वोत्कृष्ट बाणी है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी गुणों के महासागर थे। उनकी महानता को सम्पूर्णता में देखने की दृष्टि ही नहीं है किसी के पास :

इक आख से क्या बुलबुला,
कुल बहिर को देखे !

साहिल को या मंझदार को,
या लहर को देखे।

जब भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का स्मरण किया जाये, अल्लाह यार खान योगी का उपरोक्त शेर नहीं भूलना चाहिये। गुरु साहिब धर्म के रक्षक, मानव-उद्धारक, अध्यात्म के पुंज, वीर योद्धा, कुशल सेनापति, प्रेम-भक्ति के मार्गदर्शक, अमृत के दाता, सरबंस दानी के साथ ही एक उत्कृष्ट कवि और साहित्य के संरक्षक भी थे। गुरु साहिब को पूर्ववर्ती हिन्दी, संस्कृत, अरबी-फारसी, ब्रज भाषा का भी गहरा ज्ञान था। सन् १६८५ में जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पाउंटा साहिब नगर बसाया, वहां ज्ञान की गंगा बहने लगी। उनके संरक्षण में आये भारत के समकालीन सर्वश्रेष्ठ कवियों ने गुरु साहिब की प्रेरणा से उत्तम साहित्य रचा। इन कवियों की संख्या बावन थी। इसके पूर्व गुरु साहिब पांच चुने हुए सिक्खों को बनारस भेज कर उन्हें संस्कृत की प्रवीणता दिला चुके थे। ऐसे ज्ञानवान सिक्खों को 'निरमले' नाम देना गुरु साहिब के ज्ञान के प्रति सम्मान को प्रकट करने वाला था। पाउंटा साहिब प्राकृतिक रमणीयता से भरपूर स्थान था। यमुना नदी के एकांत तट पर विचरते हुए गुरु साहिब को अपने मनोभाव को शब्दों में व्यक्त करने का अनुकूल अवसर मिला, जिसका उन्होंने भरपूर उपयोग किया। जापु साहिब जैसी विलक्षण बाणी का आकार लेना यहीं संभव भी था। आश्चर्यजनक तो यह है कि इन मनोहारी स्थितियों में गुरु साहिब भविष्य के संकट भी देख रहे थे और सिक्खों को शस्त्र-अभ्यास भी कराते रहे थे। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अमृत वेले का ध्यान, जाप और सत्संग करने के पश्चात यमुना नदी के किनारे टहलने चले जाते थे और कोई अनुकूल स्थान चुन तीन घंटे तक निर्बाध बैठ कर साहित्य- सृजन किया करते थे। कभी–कभी यह समय लंबा भी हो जाता था। उनके साहित्य-सृजन के दो मुख्य उद्देश्य थे––पहला, परमात्मा की स्तुति करना और दूसरा, हताश, निराश लोगों में ऊर्जा का संचार कर परमात्मा से संग जोड़ना। जापु साहिब सहित गुरु साहिब की सभी बाणियों में यह गुण स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शब्द-शक्ति और शस्त्र-शक्ति दोनों ही अतुलनीय हैं। उनके जीवन का एक–एक पल संसार में सर्वोत्कृष्टता का जनक था। गुरु साहिब का बहुत-सा साहित्य श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने के बाद सरसा नदी पार करते हुए पानी में बह गया था। इसके बावजूद जो बाणी उपलब्ध है, उसे आत्मसात कर लेना एक महान सिद्धि की तरह है। जापु साहिब की बाणी का नित्य पाठ गुरसिक्ख को नित्य परमात्मा की ओर एक कदम आगे ले जाने वाला है। जापु साहिब की भावना को धारण करना सदैव परमात्मा की कृपा के अधीन हो जाना है :

सदा अंग संगे अभंगं बिभूते।।१९९।।

किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि।।

-डॉ. मनजीत कौर*

श्री गुरु नानक देव जी की 'जपु' बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पहली बाणी है, जिसे सिक्ख जगत में अत्यन्त श्रद्धा-भावना से जपु जी साहिब कहा जाता है। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन का पुनीत कार्य आरंभ किया तो सर्वप्रथम 'जपु' बाणी को दर्ज किया यानि कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का शुभारम्भ जपु जी साहिब से किया।

जपु जी साहिब सिक्ख धर्म का सैद्धान्तिक आधार है। सिक्ख धर्म-दर्शन का सारतत्व इस बाणी में संग्रहित है। मनीषियों ने इसे गागर में सागर भरने वाली बाणी कहा है। डॉ. जोध सिंघ के चिन्तनानुसार यह अत्यन्त सूत्रात्मक बाणी है और यह माना जाता है कि सारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जपु जी साहिब की ही व्याख्या है। बाणी के शीर्षक से ही पता चलता है कि यह बाणी जाप अथवा गम्भीर चिन्तन के लिए है। वास्तव में जपु जी साहिब में सिक्ख धर्म के लगभग सभी मूल सिद्धांत विद्यमान हैं।

इस पावन बाणी का विषय-वस्तु अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके एक-एक शबद पर श्री गुरु नानक देव जी के लासानी व्यक्तित्व की छाप उकरित हुई दिखाई देती है। यह पावन बाणी गुरसिक्खों को सहज भाव ही कंठस्थ हो जाती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रति प्यार-भाव रखने वाले अन्य धर्मों के लोगों का भी काफी बड़ा दायरा है। उनके मन-मस्तिष्क में भी जपु जी साहिब बाणी का निवास सदा बना रहता है।

जपु जी साहिब दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक बाणी है। इसमें ३८ पउड़ियां तथा आदि व अंत में एक-एक सलोक है। जपु जी साहिब बाणी का प्रमुख विषय है-- जीवात्मा और परमात्मा के मध्य कायम हुई दूरी कैसे दूर हो? इस दूरी के कारण पैदा हुई चिन्ताओं, दुख और संताप से छुटकारा कैसे मिले? इन संतापों, चिन्ताओं से मुक्ति कैसे हो? झूठ का पर्दा कैसे हटे और सचिआर होने का सुगम एवं सहज मार्ग कौन-सा हो? इस प्रकार के जिज्ञासु मन के प्रश्न उठा कर गुरु पातशाह ने उनके सहज जवाब दिए हैं। समस्त गूढ़ तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है तथा अंत में सत्य तक पहुंचने के पाँच पड़ावों का बड़ा

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९१२१७-६२५२३

सुंदर वर्णन करके श्री गुरु नानक देव जी ने दार्शनिकता तथा सामाजिकता का सामंजस्य प्रभावपूर्ण शैली में व्यक्त किया है। इन पड़ावों तक पहुंचने से पूर्व बाणी-श्रवण की महिमा प्रतिपादित की है। चिरकालीन समूची मानवता की विकट समस्या है कि दुखों से निजात कैसे मिले? चिरस्थायी सुखों की प्राप्ति कैसे मुमकिन हो? बड़े-बड़े ऋषि-मुनि, साधक इस समस्या का समाधान खोजते रहे। श्री गुरु नानक देव जी ने प्रभु-नाम-श्रवण की महत्ता दर्शाते हुए एक ही पावन पंक्ति में इस समस्या का समाधान प्रस्तुत कर दिया है-- *''सुणिऐ दूख पाप का नासु।।''* प्रभु-नाम को गायन व श्रवण करके हृदय में प्रभु के गुणों को प्रेम सहित टिकाओ! जो इस प्रकार करने का प्रयत्न करता है वह समस्त दुखों से छुटकारा पाकर आत्मिक आनंद की अनुभूति प्राप्त करता हुआ सदैव स्थिर रहने वाले सुखों को सहज ही प्राप्त कर लेता है। पांचवी पउड़ी में गुरु साहिब का पावन फरमान है :

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ।।
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ।। (पन्ना २)

चार पउड़ियां श्रवण की महिमा-गायन की हैं। चार पउड़ियों में मनन करने वालों की उच्च आत्मिक अवस्था को भी गुरु साहिब ने दर्शाया है और साथ ही इस तथ्य को भी उजागर कर दिया है कि मनन करने वालों की अवस्था को कोई बयां नहीं कर सकता।

मंने की गति कही न जाइ।।. . .
जे को मंनि जाणै मनि कोइ।। (पन्ना ३)

आओ! अब विचार करते हैं प्रस्तुत आलेख के शीर्षक अनुसार, जो कि जपु जी साहिब की ही पावन पंक्ति है। यह जिज्ञासु मन का प्रश्न है-- *''किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि।।''* अगली ही पावन पंक्ति में इसका सहज और सुंदर जवाब है :-- *''हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि।।''*

झूठ का पर्दा हटाने के लिए सत्य-मार्ग का अनुगामी होने हेतु पूर्ण सत्यस्वरूप सर्वकला-समर्थ प्रभु से जुड़ना अति आवश्यक है और यह गुरु-कृपा के बिना सम्भव नहीं। यही पावन संदेश समूची मानवता को देने हेतु गुरु पातशाह ने चार महान यात्राएं की, जिन्हें चार उदासियां के नाम से भी जाना जाता है।

प्रथम पउड़ी में गुरु जी का पावन फरमान है :

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार।।
चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार।।
भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार।।
सहस सिआणपा लख होहि
त इक न चलै नालि।।
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि।।
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि।।
(पन्ना १)

प्रभु को पाने का प्रयास आदि काल से होता आ रहा है। श्री गुरु नानक पातशाह के चिन्तनानुसार अन्त: करण को शुद्ध किए बिना तथा परमात्मा के हुक्म को जब तक स्वीकार न किया जाए, तब तक ईश्वर-प्राप्ति का कोई भी साधन सफल नहीं हो सकता।

पंचम पातशाह इस संदर्भ में समझाते हैं कि अगर जीव लाखों बार भी स्नान आदि करके शरीर को पवित्र रखने का प्रयास करे तब भी उसका मन पवित्र नहीं हो सकता :

सोच करै दिनसु अरु राति।।
मन की मैलु न तन ते जाति।। (पन्ना २६५)

जैसे बाहरी पवित्रता से हृदय पवित्र नहीं हो सकता वैसे ही बाहर से मौन धारण कर लेने से अथवा चुप रहने से मन में उठती भाव-लहरियां शांत नहीं हो जाती अर्थात् चुप रहने से भी मन में भूत काल की अनेक यादें तथा भविष्य की चिन्ताएं उमड़ती रहती हैं। जिह्वा के चुप हो जाने से मन सधता नहीं है। इस प्रकार से प्रभु को पाया नहीं जा सकता। आगे गुरु जी समझाते हैं कि अगर जीव समस्त भवनों के पदार्थ एकत्र कर ले तब भी तृष्णा के अधीन रहने से तृष्णा नहीं मिट सकती अर्थात् भूखे रह कर भी मन की भूख नहीं मिटती। 'सहस सिआणपा' अर्थात् जीव के पास हजारों ही चतुराइयां हों तो एक भी उसके साथ नहीं जाती अर्थात् चतुराइयों अथवा दुनियावी ज्ञान से भी प्रभु को नहीं पाया जा सकता। भक्त कबीर जी ने बड़ा सुंदर समझाया है :

किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा।।
जा कै रिदै भाउ है दूजा।।१।।
रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ।।
चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ।।. . .
कहु कबीर भगति करि पाइआ।।
भोले भाइ मिले रघुराइआ।। (पन्ना ३२७)

परमेश्वर को जप, तप, व्रत, पूजा आदि अथवा चतुराइयों-सियानपों से नहीं पाया जा सकता जब तक हृदय में द्वैत-भाव है। भक्त कबीर जी बड़े सहज ढंग से समझाते हैं कि प्रभु तो केवल और केवल भोले-भाव से ही मिलता है। चतुराइयों की वजह से प्रभु से जितनी दूरी बनती है, उतना ही इंसान दुखी होता है और जितना भोले-भाव से प्रभु से समीपता बढ़ती है, उतना ही इंसान सुखी रहता है।

पहली पउड़ी की अन्तिम पंक्तियों में श्री गुरु नानक देव जी जिज्ञासु मन का प्रश्न उठाते हैं कि "अकाल पुरख का प्रकाश अंत:करण में हो सके, इसके लिए योग्यता कैसे प्राप्त हो? झूठ का, विकारों का पर्दा कैसे हटे?" गुरु जी के चिंतनानुसार केवल एक ही मार्ग है, मात्र एक ही युक्ति है, एक ही तरकीब है-- हर हाल, हर परिस्थिति में ईश्वर की रज़ा में हर पल राज़ी रहना और यह रज़ा, हुक्म, यह फरमान सबके लिए अनिवार्य है। यह धुर

(दरगाह) से ही जीव के साथ चला आ रहा है। प्रभु मालिक के हुक्म के अनुसार चलना ही सचिआर होने की पहली शर्त है। यही वह साधन है, जिससे उसकी दरगाह में स्वीकृति मिलती है। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी भी मालिक प्रभु की रज़ा को सर्वोपरि मानते हुए पावन फरमान करते हैं :

तेरा कीआ मीठा लागै ।।
हरि नामु पदारथु नानकु मांगै ।। (पन्ना ३९४)

श्री गुरु नानक देव जी 'आसा की वार' बाणी में भी इसी भाव को दृढ़ करवाते हैं :

हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ।। (पन्ना ४७१)

वास्तव में जो गुरु-कृपा से अकाल पुरख सर्वकला-समर्थ प्रभु का हुक्म बूझ लेता है उसके लिए अहंकार के समस्त दरवाजे बंद हो जाते हैं। गुरु जी की स्पष्ट हिदायत है कि जो व्यक्ति प्रभु के हुक्म में चलेगा वही सचिआर अर्थात् सत्याचरण वाला बन सकेगा। परमेश्वर को पाने के लिए प्रेम का मार्ग अपनाना होगा। सचिआर वही है जो प्रभु के साथ, प्रभु के बंदों के साथ एक-सा व्यवहार करता है। प्रेम का दूसरा नाम ही प्रभु है। प्रभु-मिलाप की चाहत रखने वाला व्यक्ति केवल मूर्तियों अथवा विशेष स्थानों पर ही नहीं अपितु जर्रे-जर्रे में प्रभु के दीदार करता है। उसके लिए वैरी-मीत सब समान हो जाते हैं। वह गुरु-कृपा से सर्वत्र ईश्वरीय नूर देखता है। गुरु की आज्ञा को मन-वचन-कर्म से मानता है और यही अनुनय-विनय करता है :

गुरा इक देहि बुझाई ।।
सभना जीआ का इकु दाता
सो मै विसरि न जाई ।। (पन्ना २)

डॉ. जोध सिंघ के चिन्तनानुसार 'जपु' के सोलहवें पद में बताया गया है कि सचिआर बनने के लिए व्यक्ति को अंधविश्वासों को छोड़कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपने अंदर उत्पन्न करना होगा। सचिआर बनने हेतु जपु जी साहिब में यह भी बताया गया है कि अपने अहं को नष्ट करने के लिए व्यक्ति को अपने अन्तर्मन को परम विस्मय से भरना होगा और ऐसा तभी सम्भव है यदि शरीर को अत्यधिक कष्ट देने वाली साधना को छोड़कर केवल *''मनि जीतै जगु जीतु''* की उक्ति को जीवन में चरितार्थ किया जाए।

अन्त में श्री गुरु नानक देव जी परम सत्य में लीन होने के लिए पांच अवस्थाओं का वर्णन करते हैं, जिन्हें 'पांच खंड' कहा गया है। इन्हें आध्यात्मिक सफर के पड़ाव कहा गया है :--

१. धर्म खंड
२. ज्ञान खंड
३. सरम (श्रम) खंड
४. करम खंड
५. सचखंड

जपु जी साहिब में ३४ से ३७वीं पउड़ी तक मनुष्य की आत्मिक अवस्था के पांच खंड बताए गए हैं। प्रो. साहिब सिंघ ने इन पांचों खण्डों की बहुत सुंदर व्याख्या की है। उनके चिन्तनानुसार, किस प्रकार ईश्वर की रहमत से मनुष्य साधारण अवस्था से ऊँचा उठ कर ईश्वर में एक रूप हो जाता है। सर्वप्रथम मनुष्य दुनियावी विषय-विकारों से विमुख होकर आत्मा की ओर अग्रसर होता है। उसे बोध होने लगता है कि मानव-जीवन का उद्देश्य क्या है? संसार में मानव के आने का प्रयोजन क्या है तथा उसका असल कर्त्तव्य क्या है? फिर गुरु-कृपा से करने योग्य कार्य करता हुआ, अपने उत्तरदायित्वों को बाखूबी निभाता हुआ, धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझ कर, इस धरती को धर्म का आचरण करने का अस्थायी विश्राम करने का स्थल मानकर सत्यलीनता के परम लक्ष्य को पाने हेतु तत्पर होता है। ज्ञान खंड में ईश्वरीय सत्ता का विराट रूप निरन्तर कार्यशील है। इस विशाल एवं विराट संरचना में व्यक्ति को यह एहसास हो जाता है कि इस विराट संरचना में 'मैं' तो बहुत ही छोटा-सा अंश मात्र है। तब जीव के बढ़प्पन का समस्त अहंकार चकनाचूर हो जाता है और वह आत्मविभोर हो 'तू ही तू' के प्रभु-प्रेम के अनहद नाद का आनंद लेते हुए सचखंड में प्रवेश पाकर, सदा के लिए प्रभु में लीन होकर हृदय रूपी घर को ही सचखंड बना लेता है। गुरु जी का पावन फरमान है :

मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु
घट ही तीरथि नावा ।।
एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है
बाहुड़ि जनमि न आवा ।। (पन्ना ७९५)

सत्य मार्ग के अनुगामी प्रभु के नाम-रंग में इस कद्र रंग जाते हैं कि उनके मुख उज्जवल हो जाते हैं इस लोक में भी तथा ईश्वरीय दरगाह में भी। यही नहीं, वे अपना जीवन तो सफल बनाते ही हैं, उनके साथ अनेक का उद्धार भी हो जाता है :

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ।।
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ।।
(पन्ना ८)

'सिंह' नहीं 'सिंघ' लिखें!

-प्रो. सुरिंदर कौर*

सिक्ख धर्म विश्व का सबसे आधुनिक धर्म है, जिसकी स्थापना केवल ५५४ वर्ष पूर्व ही हुई है । अन्य धर्मों के प्रचार व प्रसार से कहीं आगे इतने अल्प समय में भी सिक्ख धर्म आज विश्वव्यापी है। अपने आरंभ के काल से ही सिक्ख धर्म को राजनैतिक, सामाजिक व धार्मिक विरोधों का सामना करना पड़ा, अनथक संघर्ष करना पड़ा, कई बार तो समूची कौम का अस्तित्व तक मिटाने के प्रयास किये गए, मगर सिक्खों ने अपने गुरु साहिबान के भरोसे असह पीड़ा सहन की, अकह प्रताड़नाएं झेलीं, घर-बार छोड़े, जंगलों में, बीहड़ों में, बियाबानों में दिन बिताए, बेशुमार शहादतें दीं, लेकिन धर्म को यशस्वी बनाए रखा। आततायियों का जितना अत्याचार सिक्ख धर्म ने झेला, यदि किसी भी अन्य धर्म को झेलना पड़ता तो शायद वह संसार से मिट ही जाता। खास तौर पर अगर सिक्खों की तादाद देखें तो यह एक करिश्मा ही लगता है। इतने आत्म-बल और सहन-शक्ति का प्रदर्शन मानव इतिहास के उत्सर्ग का द्योतक है, मानवीय सीमाओं की पराकाष्ठा है और यही सिक्ख धर्म की विलक्षणता है। इसी विलक्षणता के आधार पर सिक्ख धर्म विश्व में अनुपम इतिहास और अति विशिष्ट स्थान बना चुका है। सिक्ख धर्म का गौरव और प्रतिष्ठा आज विश्व-विख्यात है।

परंतु सिक्खों का संघर्ष अभी समाप्त नहीं हुआ है। पिछली तीन सदियों में सिक्ख धर्म के अस्तित्व को कई चुनौतियां मिलीं और सिक्ख उसका प्रबलता के साथ सामना करते हुए अपनी विशिष्ट छवि व पंथक अस्तित्व को बचाने में सफल रहे। बीसवीं और इक्कीसवीं सदी में संघर्ष सशस्त्र न होकर बौधिक, साहित्यिक रूप से और अधिक जटिल हो गया है। कभी सिक्ख धर्म को हिंदू धर्म का ही एक हिस्सा बताकर, तो कभी सिक्खों को आतंकवादी कहकर उनकी छवि को गलत रूप से पेश किया जा रहा है। एक ओर सांस्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर 'लचर कल्चर' ने पंजाब के नौजवानों को तबाह कर दिया तो दूसरी ओर सिक्ख विरोधी ताकतों ने

*2, Banta Singh Chawl, Opp. Manish Park, Jijamata Marg, Pump House, Andheri (E), Mumbai-400093

सिक्ख इतिहास को तोड़-मरोड़कर अपने लाभानुसार प्रस्तुत किया। यहां तक कि सिक्ख गुरु साहिबान तक को केवल हिंदू धर्म-रक्षक के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा और यह सिलसिला अब भी निरंतर जारी है।

ऐसा ही अस्तित्व मिटाने वाला प्रयास हिंदी साहित्य और साहित्यकारों द्वारा भी किया गया, जिसमें बड़ी आसानी से हमारे सिक्ख साहित्यकार और अन्य भाषा के साहित्यकार भी फंस गए। हिन्दी में अक्सर सिक्ख नामों को लिखते समय 'सिंघ' उपनाम के स्थान पर 'सिंह' का प्रयोग किया जाता है, जो सर्वथा गलत है ।'सिंघ' उपनाम सिक्खों की विशिष्ट पहचान है। अन्य भाषाओं में 'सिंघ' शब्द के प्रयोग को लेकर कोई दिक्कत नहीं है, परंतु हिंदी में यह गलत परंपरा दशाब्दियों से चली आ रही है। मराठी भाषा भी देवनागरी में ही लिखी जाती है, मगर वहां 'सिंघ' अथवा 'सिंग' ही लिखा जाता है । अंग्रेजी में भी 'Singh ही लिखा जाता है, 'Sinh' नहीं । यह मामला धार्मिक संकीर्णता का नहीं है, सिक्ख अस्तित्व का है।

'सिंघ' को 'सिंह' लिखने वाले यह तर्क देते हैं कि इससे शब्द के अर्थ में तो कोई फर्क नहीं पड़ता, परंतु ऐसे कई शब्द हैं, जिनके उच्चारण-भेद से अर्थ में तो फर्क नहीं पड़ता मगर व्यक्ति का अस्तित्व ही बदल जाता है। 'पाटिल' और 'पटेल' दोनों का अर्थ एक है– गांव का मुखिया। मगर अब यदि भारत की पूर्व राष्ट्रपति 'प्रतिभा पाटिल' को 'प्रतिभा पटेल' लिख दिया जाए तो उपद्रव मच जाएगा; एक मराठी मूल का व्यक्ति गुजराती बन जाएगा, जबकि धर्म तो फिर भी हिंदू ही रहेगा। ऐसे ही भारत के पूर्व प्रधानमंत्री का नाम 'मनमोहन सिंघ' के स्थान पर 'मनमोहन सिंह' लिखने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होती, ऐसा क्यों?

हिंदी में 'सिंघ' को 'सिंह' लिखते-लिखते अब हालत यहां तक पहुंच गई है कि वे लोग नामों का भी अनुवाद करके लिखने लगे हैं, जैसे– 'सुरिंदर' को 'सुरेंद्र', 'दविंदर' को 'देवेंद्र' तथा 'रजिंदर' को 'राजेंद्र' आदि। यहां तक कि अब गुरु साहिबान के नामों के साथ भी खिलवाड़ हो रहा है। 'गुरु गोबिंद सिंघ जी' के स्थान पर 'गुरु गोविंद सिंह' लिखा जा रहा है, जो सर्वथा अनुचित है, दुराग्रह है। इस तथ्य के समर्थन में ठोस कारण भी हैं, जिनकी यहां चर्चा करना अनिवार्य है

व्याकरणिक आधार

व्याकरण के अनुसार किसी भी व्यक्तिवाचक संज्ञा (विशेष नाम) का अनुवाद करते समय केवल लिप्यंतर किया जाता है, अनुवाद नहीं । इस बात को एक आम अथवा औसत शिक्षण प्राप्त करने वाला भी जानता है, तो विद्वान श्रेणी क्यों नहीं? लिप्यंतर का अर्थ

है– अक्षरों का एक भाषा से दूसरी भाषा में परिवर्तन, समूचे विशेष नाम का अनुवाद किया ही नहीं जाता।

उदाहरण १ : यदि किसी अंग्रेज महिला का नाम है Rosy Smith, जो कि एक व्यक्तिवाचक संज्ञा है, अब यदि हिंदी में उनका नाम लिखना होगा तो केवल लिप्यंतर करके 'रोजी स्मिथ' लिखा जाएगा, न कि पूरा अनुवाद करके 'गुलाबो लोहार'। इससे तो उस महिला के नामके साथ-साथ उसकी पहचान ही बदल जाएगी।

उदाहरण २ : यदि किसी पठान का नाम 'फरजंद खान' अथवा 'फतेह खान' है तो हिंदी में भी वैसे ही लिखा जाएगा। उनका अनुवाद करके 'पुत्र खान' या 'विजय खान' नहीं लिखा जा सकता।

उदाहरण ३ : यदि किसी महिला का नाम 'कला जोशी' है तो उसे अंग्रेजी में लिखते समय केवल लिप्यंतर करके 'Kala Joshi' ही लिखा जाएगा, अनुवाद करके 'Art Priest' नहीं किया जाएगा।

इस प्रकार यदि नामों का अनुवाद किया जाने लगा तो किसी व्यक्ति की भी अपनी विशिष्ट पहचान नहीं रहेगी। व्याकरण की दृष्टि से भी यह गलत है। हिंदी के लेखक अपना नाम किसी भी भाषा में लिखें, केवल लिप्यंतर करके सही नाम लिखते हैं, पूरा अनुवाद नहीं करते। कोई भी 'मैथिलीशरण गुप्त' को 'Maithili Refuge Secret' या 'रामधारी सिंह दिनकर' को 'Ramholder Lion Sun' नहीं लिखता। तो यह बात विचार करने को मजबूर करती है कि केवल सिक्खों के नामों (व्यक्तिवाचक संज्ञाओं) का ही हिंदी में अनुवाद क्यों किया जाता है और किसकी अनुमति से?

ऐतिहासिक कारण

भाषा की उत्पत्ति और विकास की प्रक्रिया में कई शब्द ऐसे हैं जो सहज ही विकसित हुए और विशेष बन गए। विशेष संज्ञाएं तो विशेष स्थान, प्रक्रिया अथवा व्यक्ति द्वारा ही प्रयोग में लाई जाती हैं।

'सिंघ' शब्द, जो कि सिक्खों का अनिवार्य 'उपनाम' है, किसी सहज प्रक्रिया अथवा कालावधि में उत्पन्न नहीं हुआ है। सन् १६९९ में खालसा - सृजन के साथ ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसे विशेष उपाधिस्वरूप सिक्ख पुरुषों को प्रदान किया था। सबसे पहले पांच प्यारों के नामों के साथ 'सिंघ' लगा और छठे स्थान पर स्वयं गुरु साहिब जी ने अपने नाम को भी बदल कर 'गोबिंद सिंघ' बना लिया। यह शब्द उस समय भी 'सिंघ' ही था, 'सिंह' नहीं। यह विशेष प्रक्रिया द्वारा विशेष नाम के रूप में सिक्ख कौम को मिला है, अत: 'सिंघ' का अनुवाद नहीं किया जा सकता, इसे

यथावत ही लिखना है।

भाषाई साक्ष्य

'सिंह' शब्द संस्कृत का है, जो अपना स्वरूप बदलते-बदलते कई भाषाओं में विविध उच्चारणों के साथ बोला जाता है। इसका प्रकृत स्वरूप भी 'सिंह' ही है। हिंदी में भी यह 'सिंह' ही है, लेकिन बंगाल और उड़ीसा में यह 'सिन्हा' बन गया। पंजाबी और अन्य उत्तरी भाषाओं में प्राकृत 'सिंह' का उच्चारण 'सिंघ' रूप में हुआ और फिर गुरमुखी में यह शब्द इसी स्वरूप में प्रयोग किया गया। यह अब पंजाबी का ही शब्द है। गुरबाणी उच्चारण के समय गुरु साहिबान ने भी इसी का प्रयोग किया है, जैसे श्री गुरु रामदास जी का फरमान है :

बकरी सिंघु इकतै थाइ राखे
मन हरि जपि भ्रमु भउ दूरि कीजै ।।
(पन्ना ७३५)

श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार :

— पंच सिंघ राखे प्रभि मारि ।।
दस बिघिआड़ी लई निवारि ।। (पन्ना ८९९)

— सिंघु बिलाई होइ गइओ त्रिणु मेरु दिखीता ।। (पन्ना ८०९)

— गऊ चरि सिंघ पाछै पावै ।। (पन्ना १९८)

यहां तक कि भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में भी 'सिंघ' शब्द का ही प्रयोग किया है। उनकी वारें पंजाबी और कबित्त ब्रज भाषा में रचे गए। हिंदी भाषी क्षेत्रों में उन्होंने कई वर्षों तक प्रचार किया। वे पंजाबी, हिंदी, ब्रज और उससे संबंधित अन्य सभी भाषाओं के ज्ञाता थे। फिर भी उन्होंने सोच-समझ कर शब्द 'सिंघ' का ही प्रयोग किया, जैसे :

— सिंघु बुके मिरगावली
भंनी जाइ न धीरि धरोआ। (वार १ : २७)

— बुकिआ सिंघ उजाड़ विचि
सभि मिरगावलि भंनी जाई। (वार १ : ३४)

— पहुता नगरि दुआरका
सिंघ दुआरि खलोता जाए। (वार १ : ९)

— चउथा करि नरसिंघ रूपु
असुरु मारि प्रहिलादि उबारे। (वार २३:१०)

भक्त-बाणी, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का एक प्रमुख हिस्सा है, जिसे अपनी उदासियों के समय स्वयं श्री गुरु नानक देव जी ने एकत्रित किया था, जो बाणी जिस भाषाई स्वरूप में मिली उसे उसी स्वरूप में श्री गुरु अरजन देव जी ने दर्ज किया। भक्त-बाणी बहुत ही विस्तृत क्षेत्र और काल में रची गई, मगर उसमें भी शब्द 'सिंघ' ही मिलता है, 'सिंह' नहीं, जैसे भक्त कबीर जी :

बैठि सिंघु घरि पान लगावै घीस गलउरे लिआवै ।। . . .
रूप कंनिआ सुंदरि बेधी ससै सिंघ गुन गाए ॥
(पन्ना ४७७)

देखत सिंघु चरावत गाई ॥ (पन्ना ४८१)

भक्त नामदेव जी :

सिंघच भोजनु जो नरु जानै॥

ऐसे ही ठगदेउ बखानै॥ (पन्ना ४८५)

भक्त सधना जी :

सिंघ सरन कत जाईऐ जउ जंबुकु ग्रासै॥

(पन्ना ८५८)

यह स्पष्ट है कि मध्यकालीन हिंदी भाषा में भी शब्द 'सिंघ' ही प्रचलित और स्वीकृत था। जब हिंदी के लेखक उन रचनाओं का प्रमाणित संस्करण प्रस्तुत करते हैं तब तो 'सिंघ' को यथावत् रहने देते हैं, केवल सिक्खों के नामों के साथ लगे 'सिंघ' का अनुवाद करके 'सिंह' बना देते हैं। साफ है कि यह विशेषत: सिक्ख कौम के साथ दुराग्रही व्यवहार है, जिसे फौरन बदलने की जरूरत है।

सामाजिक कारण

राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल और अन्य पड़ोसी प्रदेशों में कुछेक जातियों के नाम के साथ 'सिंह' उपनाम का प्रयोग होता है, जिनमें से हरियाणवी, ठाकुर जाति, राजपूत आदि विशेष हैं। ये जातियां अपने नाम के बाद गोत्र लगाने से पूर्व 'सिंह' का प्रयोग करती हैं। सिक्ख कौम में गोत्र का प्रयोग वर्जित है। यहां केवल उपनाम 'सिंघ' का ही प्रयोग अनिवार्य है। ऐसा दशमेश पिता ने जात-पांत के भिन्न-भेद मिटाकर सामाजिक एकता लाने के लिए भी किया था। यह एक क्रांतिकारी सामाजिक आंदोलन था, जिसने जात-पांत व्यवस्था के विरुद्ध समरसता और समानता को स्वीकारा। पूरी कौम में दो ही सांझे उपनाम हैं– पुरुषों के लिए 'सिंघ' और स्त्रियों के लिए 'कौर'। सिक्ख संघर्ष काल में तो 'सिक्ख' शब्द के स्थान पर पुरुषों के लिए 'सिंघ' और स्त्रियों के लिए 'सिंघणी' ही प्रचलित हुआ, जो आज तक चल रहा है। यहां तक कि अरदास में भी शब्द ''जिन्हां सिंघां सिंघणीआं ने धरम हेत सीस दित्ते'' का ही प्रयोग है।

'सिंघ' शब्द सिक्ख धर्म के अस्तित्व का प्रतीक है। अब यदि इस शब्द का अनुवाद करके 'सिंह' का प्रयोग सिक्ख नामों के साथ किया जाता है तो सिक्ख की पहचान ही भ्रमित हो जाती है।

उदाहरण

यदि किसी स्थान पर पाठक यह लिखा पाते हैं कि ''अजीत सिंह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है।'' इस नाम से यह स्पष्ट नहीं होता कि यह व्यक्ति सिक्ख है, राजपूत है, ठाकुर जाति का है या कोई और, मगर यदि 'अजीत सिंघ' लिखा हो तो साफ है कि व्यक्ति 'सिक्ख' ही है। इसी प्रकार हिंदी के लेखक सिक्ख (विशेष) नामों का अनुवाद कर व्यक्ति का धार्मिक अस्तित्व ही भ्रम में डाल देते हैं। 'सुरिंदर सिंघ' लिखने से स्पष्ट है कि व्यक्ति

सिक्ख है मगर 'सुरेंद्र सिंह' लिखने से उसका अस्तित्व ही भ्रामक बन जाता है।

अत: हिंदी के लेखकों से और हिंदी में सिक्ख नामों को लिखने वाले प्रत्येक व्यक्ति से यह निवेदन है कि दुराग्रह को छोड़कर, व्याकरण को समझ कर विशेष नामों का अनुवाद न करें। सिक्ख नामों के साथ 'सिंघ' शब्द ही लिखें, 'सिंह' नहीं। 'गुरमति ज्ञान' के संपादक सचमुच प्रशंसनीय हैं जो कि सही उपनाम 'सिंघ' का ही प्रयोग करते हैं। यह एक अभियान है, जिसमें सभी का योगदान जरूरी है।

एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि हिंदी में नामों का अनुवाद करके लिखने से जनगणना के समय भी दिक्कत पेश आती है। बेशक पंजाब प्रांत में न हो, लेकिन अन्य प्रांतों में 'सिंघ' के स्थान पर 'सिंह' लिखने से व्यक्ति को सिक्ख न मानकर हिंदू ही मान लिया जाता है । कहीं-कहीं पर यह भ्रामक पहचान का नतीजा होता है, लेकिन ज्यादातर मामलों में जान-बूझकर ही सिक्ख की पहचान 'सिंह' लिखकर भ्रमित की जाती है। यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव रहा है। जनगणना के समय अपना धर्म सिक्ख लिखवाने के लिए मुझे उन अधिकारियों से खासी बहस करनी पड़ी थी।

यदि हिंदी लिखते समय 'सिंघ' का सही उपयोग हो, नामों का अनुवाद न होकर केवल लिप्यंतर ही किया जाए तो धार्मिक पहचान की समस्या अपने आप ही हल हो जाएगी । अत: प्रत्येक सिक्ख से यह अनुरोध है कि अपना नाम हिंदी में लिखते समय 'सिंघ' का ही प्रयोग करें और दूसरों से भी अपना नाम इसी प्रकार लिखने को कहें, ताकि आज सिक्ख के अस्तित्व को धूमिल करने वाले सफल न हो सकें।

इन बातों का खास ध्यान रखें!

* प्रत्येक सिक्ख पुरुष या महिला अपना नाम 'सिंघ' या 'कौर' के साथ पूरा लिखे!

* हिंदी में सिक्ख का नाम लिखते समय 'सिंह' नहीं, 'सिंघ' का प्रयोग करें!

* हिंदी में सिक्ख का नाम लिखते समय 'सरदार' का ही प्रयोग करें!

* गुरु साहिबान के नामों के प्रति सजग रहें!

'गुरु गोविंद सिंह' नहीं, 'गुरु गोबिंद सिंघ जी' लिखें!

कृपाण 'गुरु गोबिंद सिंघ' की

-स. करनैल सिंघ सरदार पंछी*

उठी आवाज़-ए-हक[१] परबत से थी, इक बार 'गुरु गोबिंद सिंघ' की।
ख़लाअ[२] में गूंजती है आज भी, ललकार 'गुरु गोबिंद सिंघ' की।

पहाड़ों से अगर पूछोगे तो, सब कुछ बता देंगे,
तहफ्फुज़[३] के लिए देखी गई, यलग़ार[४] 'गुरु गोबिंद सिंघ' की।

सर-ए-मग़रूर[५] को करके कलम ही म्यान में लौटी,
कभी नाकाम लौटी ही नहीं, कृपाण 'गुरु गोबिंद सिंघ की।

बजाए ईंट इसमें सर लगे हैं दो-दो बच्चों के,
नहीं टूटी, न टूटेगी कभी, दीवार 'गुरु गोबिंद सिंघ' की।

हज़ारों नशे दुश्मन रोज़ देता है रग़-ए-जाँ[६] को,
मगर फिर भी न सोई ग़ैरत-ए-बेदार[७] 'गुरु गोबिंद सिंघ' की।

सियासत जानती सब है मगर ख़ामोश रहती है,
कि कलग़ी के लिए मौज़ूं है तो, दसतार 'गुरु गोबिंद सिंघ' की।

इधर चमकी, उधर दमकी, यहाँ दमकी, वहाँ चमकी,
कोई बर्क-ए-तपां[८] थी या थी कृपाण 'गुरु गोबिंद सिंघ' की।

यह उनके जन्म-दिन पर आज 'पंछी' सब प्रण उठाएं,
कि हम बेदाग रखेंगे सदा, दसतार 'गुरु गोबिंद सिंघ' की।

१. आवाज़-ए-हक = सच की आवाज, २. ख़लाअ = ज़मीन से आसमां तक
३. तहफ्फुज़ = रक्षा, ४. यलगार : हमला, ५. सर-ए-मग़रूर = अहंकारी
६. रग़-ए-जाँ = बड़ी नाड़ी, ७. गैरत-ए-बेदार = जागृत स्वाभिमान
८. बर्क-ए-तपां = आग उगलती आसमानी बिजली

*जेठी नगर, मालेर कोटला, खन्ना, (जिला लुधियाना) —१४१४०१ फोन : ९४१७०-९१६६८

ख़बरनामा

हाईकोर्ट में सिक्ख वकीलों की जज के तौर पर नियुक्ति रोकना सिक्खों के साथ भेदभाव : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : २१ नवंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने भारत सरकार की तरफ से पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट के जजों की नियुक्ति के अवसर पर सुप्रीम कोर्ट की सिफ़ारिशों में से दो सिक्ख उम्मीदवार वकीलों को बाहर करने की कड़े शब्दों में निंदा की है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने इसे सिक्खों के साथ भेदभाव करार देते हुए कहा कि केंद्र सरकार दोनों सिक्ख जजों की तुरंत नियुक्ति करे। जारी बयान में उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा इस मामले में सख़्त टिप्पणी करना केंद्र सरकार को कटघरे में खड़ा करती है। एडवोकेट धामी ने केंद्र सरकार से प्रश्न किया कि वो यह स्पष्ट करे कि सीनियर सिक्ख वकीलों को किस नीति के अंतर्गत बाहर रखा गया है, जबकि पाँच में से बाकी तीन की नियुक्ति कर दी गई है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि सिक्खों ने देश के लिए अग्रणी बन कर हमेशा योगदान दिया है, परन्तु उनके अधिकारों को अक्सर दबाए जाने की खबरें आती रही हैं। पहले ही देश में सिक्ख अल्पसंख्यक हैं। यदि उनके साथ पक्षपाती रवैया सरकारों की नीति बनता है तो इससे बड़ा और अन्याय नहीं हो सकता। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट द्वारा केंद्र सरकार को दो सिक्ख वकीलों की जज के तौर पर नियुक्ति करने की सिफारिश की प्रशंसा भी की। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट में विशेष तौर पर सिक्ख जजों की नियुक्ति को प्राथमिकता देनी चाहिए, क्योंकि इन दोनों राज्यों में देश के बाकी हिस्सों की अपेक्षा सिक्खों की संख्या अधिक है। यदि पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट में सिक्ख जज कार्यशील होते हैं तो इस के और लोगों के मसलों का हल अच्छे ढंग के साथ होगा। उन्होंने केंद्र सरकार से अपील की कि जजों की नियुक्ति से सम्बन्धित सुप्रीम कोर्ट की सिफ़ारश को हू-ब-हू लागू कर सीनियर सिक्ख वकील स. हरमीत सिंघ (ग्रेवाल) और स. दीपिंदर सिंघ नलवा की नियुक्ति की जाये।

बड़ी संख्या में सिक्ख श्रद्धालुओं को वीज़ा न देने पर एडवोकेट धामी ने जताया सख़्त एतराज़

श्री अमृतसर साहिब : २३ नवंबर : श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व के अवसर पर पाकिस्तान जाने वाले सिक्ख जत्थे के बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को वीजा न देने पर शिरोमणि गुरुद्वारा

प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने सख़्त एतराज़ प्रकट किया है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा १६८४ श्रद्धालुओं के पासपोर्ट दिल्ली स्थित पाकिस्तान दूतावास में भेजे गए थे, जिनमें से ७८८ को वीज़ा न देना अति दुर्भाग्यपूर्ण है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा जत्थे में हमेशा ही पंजाब के कोटे के अनुसार पासपोर्ट भेजे जाते हैं, परन्तु दुख की बात है कि इस बार ५० प्रतिशत के लगभग श्रद्धालुओं को वीजा न देकर उनकी भावनाओं को आहत किया गया है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों की सरकारों को इस तरफ विशेष तौर पर ध्यान देना चाहिए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि पाकिस्तान दौरे के दौरान उन्होंने यह मामला भी उठाया था, जिस दौरान पाकिस्तान के सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों ने विश्वास दिलाया था कि वे इस पर सौहार्दपूर्ण से कार्य करेंगे। दुख की बात है कि पहले की तरह अबकी बार भी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को वीजा से वंचित रखा गया है।

सुलतानपुर लोधी की घटना में पुलिस कार्यवाही पर एडवोकेट धामी ने उठाए सवाल

श्री अमृतसर साहिब : २४ नवंबर : गुरुद्वारा अकाल बुंगा साहिब यादगार नवाब कपूर सिंघ छावनी निहंग सिंघां सुलतानपुर लोधी में घटित घटना की गुरुद्वारा श्री बेर साहिब के मैनेजर से जांच रिपोर्ट लेने के पश्चात् शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि इसमें पुलिस की भूमिका सही नहीं थी। उन्होंने कहा कि प्रशासन को चाहिए था कि वह दोनों पक्षों को बैठा कर मसला हल करता, परंतु पुलिस द्वारा जिस ढंग से गुरुद्वारा साहिब की मान-मर्यादा को आँखों से ओझल कर हस्तक्षेप किया गया है, उससे पंजाब सरकार की कार्यशैली सवालों के घेरे में आई है। एडवोकेट धामी ने कहा कि पंजाब सरकार हर स्तर पर असफल हो रही है और खासकर कानून व्यवस्था को संभालने में बिल्कुल भी संजीदगी नहीं दिखा रही। उन्होंने कहा कि गुरुद्वारा साहिबान के मामले स्पष्ट रूप से संगत की भावनाओं के साथ जुड़े हुए होते हैं, जबकि भगवंत मान की सरकार इसे संजीदगी से नहीं ले रही।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भगवंत मान गृह मंत्री होने के नाते पुलिस प्रशासन द्वारा गुरुद्वारा साहिब में हस्तक्षेप करने और मर्यादा का उल्लंघन करने के लिए स्पष्ट रूप से ज़िम्मेदार हैं। सुलतानपुर लोधी की पुलिस कार्यवाही से सिक्खों का अक्स भी दुनिया भर में ख़राब हुआ है, जिसके लिए मुख्यमंत्री को क्षमा मांगनी चाहिए।

श्री अकाल तख़्त साहिब द्वारा बंदी सिंघों के मामले में गठित उच्च स्तरीय कमेटी की हुई पहली सभा

श्री अमृतसर साहिब : ९ दिसंबर : श्री अकाल तख़्त साहिब द्वारा भाई बलवंत सिंघ राजोआणा तथा अन्य बंदी सिंघों की रिहाई से सम्बन्धित केंद्र सरकार के साथ बातचीत करने के लिए गठित की गई ५-सदस्यीय उच्च स्तरीय कमेटी की पहली सभा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य कार्यालय में हुई। इस सभा के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी, दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान स. हरमीत सिंघ कालका, अजीत प्रकाशन समूह के प्रशासनिक संपादक डॉ. बरजिंदर सिंघ हमदर्द, भाई बलवंत सिंघ राजोआणा की बहन बीबी कमलदीप कौर राजोआणा तथा सीनियर अकाली नेता स. विरसा सिंघ बलटोहा उपस्थित हुए।

दो घंटे से अधिक समय चली सभा के दौरान गंभीर विचार-विमर्श के बाद मीडिया को संबोधित करते हुए एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने बताया कि भाई राजोआणा तथा अन्य बंदी सिंघों के बारे में केंद्र सरकार के साथ बातचीत करने का फ़ैसला हुआ है। इस सम्बन्ध में देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को मुलाकात के लिए समय देने के लिए पत्र लिखा जा रहा है। उन्होंने कहा कि श्री अकाल तख़्त साहिब द्वारा गठित इस कमेटी की पहली मीटिंग में भारत सरकार के साथ बंदी सिंघों के मामले पर सदभावना भरे माहौल में बातचीत करने का निर्णय किया गया है और इसी दिशा में ही अगले कदम उठाए जाएंगे। एडवोकेट धामी ने कहा कि कमेटी सदस्यों के कीमती सुझाव के अनुसार ही हर कदम उठाया जायेगा। हम चाहते हैं कि जल्द ही बंदी सिंघों के मामले में एक बढ़िया माहौल में सरकार के साथ बातचीत आगे बढ़ाई जाए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि बंदी सिंघों के मानवाधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए लोकतांत्रिक ढंग से यत्न जारी रखे जाएंगे।

एडवोकेट धामी ने कहा कि यह कमेटी श्री अकाल तख़्त साहिब के प्रतिनिधि-समूह के रूप में है और इसके प्रत्येक सदस्य ने अपने जिम्मे जुंमे लगी सेवा तनदेही के साथ निभाने की वचनबद्धता अभिव्यक्ति की है। प्रत्येक सदस्य की भावना है कि बंदी सिंघों का मामला किसी निष्कर्ष पर अवश्य पहुँचे और आशा है कि इसमें सफलता मिलेगी। उन्होंने देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री श्री अमित शाह से भी अपील की कि वे सिक्खों की भावनाओं को समझते हुए बंदी सिंघों के मामले को हल करने की पहलकदमी करें।

पत्रकार सम्मेलन के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य भाई राम सिंघ, सिक्ख नेता भाई जसबीर सिंघ घुंमण, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सचिव स. प्रताप सिंघ, ओ. एस. डी. स. सतबीर सिंघ धामी, स. बलविंदर सिंघ काहलवें, स. कुलविंदर सिंघ रमदास, स. जसविंदर सिंघ जस्सी, स. शाहबाज सिंघ, स. परमजीत सिंघ आदि उपस्थित थे।

बाबा दीप सिंघ जी शहीद

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

January 2024

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

तख़्त सचखंड श्री हज़ूर, अबिचल नगर साहिब,
नांदेड़ (महाराष्ट्र)

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh

Date : 7-1-2024